ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष ५८ अंक २० मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अक्टूबर (द्वितीय) २०१६

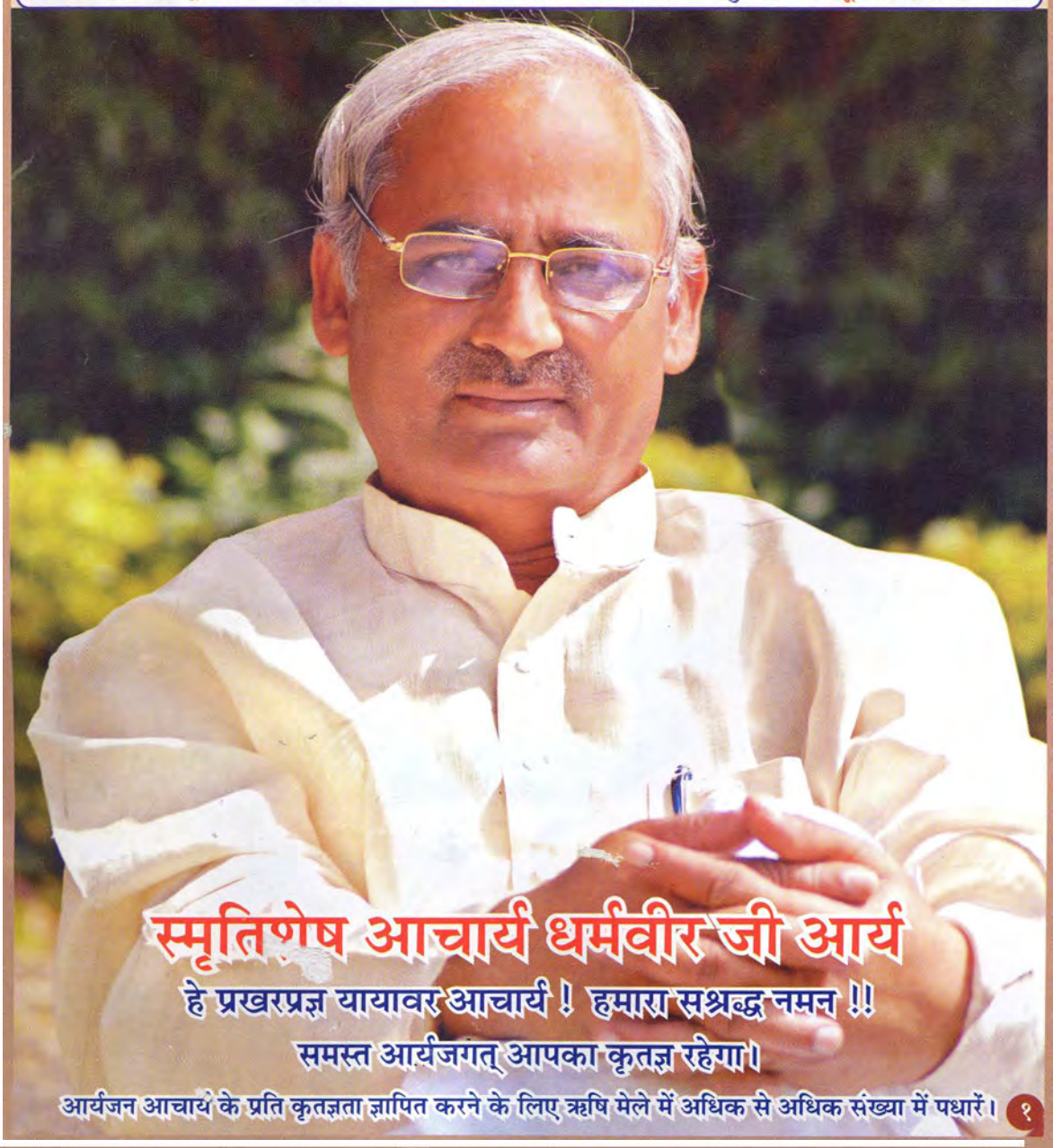

स्मृतिशेष आचार्य धर्मवीर जी आर्य

हे प्रखरप्रज्ञ यायावर आचार्य ! हमारा सश्रद्ध नमन !!

समस्त आर्यजगत् आपका कृतज्ञ रहेगा।

आर्यजन आचार्य के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए ऋषि मेले में अधिक से अधिक संख्या में पधारें।

श्रीमती अनिता भदेल
राज्यमंत्री-राजस्थान

अन्त्येष्टि संस्कार

मुखाग्नि देती हुई सुपुत्रियाँ

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : २०

दयानन्दाब्द: १९२

विक्रम संवत्: आश्विन शुक्ल, २०७३

कलि संवत्: ५११७

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., द्विवार्षिक-३९० रु.,
त्रिवार्षिक-५८० रु.,
आजीवन-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।
एक प्रति का मूल्य - रु. १५/-

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डालर
द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डा.,
त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डा.,
आजीवन-(=१५वर्ष)-५००पा./८०० डा.
एक प्रति का मूल्य - पाउण्ड-३
एक प्रति का मूल्य - डालर - ४

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अक्टूबर द्वितीय २०१६

अनुक्रम

०१. यज्ञ की वेदी पर पाखण्ड के पाँव	सम्पादकीय	०४
०२. ऋषि मेला-२०१६ कार्यक्रम		०७
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०८
०४. मेरे पिता जी	तपेन्द्र कुमार	१४
०५. १३३ वाँ ऋषि बलिदान समारोह		१७
०६. आत्मा का स्थान-३	स्वामी आत्मानन्द	१८
०७. संस्था-समाचार		२१
०८. कुर्बानी कुरान के विरुद्ध?		२८
०९. एक महान् कर्मयोगी का महाप्रयाण	डॉ. रामप्रकाश वर्णी	३१
१०. हा! बीत गया वो स्वर्णिम युग		३५
११. वेद गोष्ठी २०१६ के लिए निर्धारित विषय		३९
१२. ऐसी कृपा करो कि हम सब धर्मवीर हों		४०

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

यज्ञ की वेदी पर पाखण्ड के पाँव

– धर्मवीर

प्रस्तुत सम्पादकीय प्रो. धर्मवीर जी ने आकस्मिक निधन से पूर्व लिखा था। इसे यथावत् प्रकाशित किया जा रहा है।

-सम्पादक

गत दिनों एक संस्था की यज्ञशाला देखने का अवसर मिला। यज्ञशाला भव्य और सुन्दर बनी हुई देखकर अच्छा लगा। प्रतिदिन यज्ञ होता है, यह जानकर प्रसन्नता होनी स्वाभाविक है।

यज्ञशाला देखने पर दो बातों की यज्ञ से संगति बैठती नहीं दिखी। संस्था प्रमुख उस समय संस्था में थे नहीं, अत: मन में उठे प्रश्न अनुत्तरित ही रहे। **पहली बात** यज्ञशाला के बाहर और सब बातों के साथ-साथ एक सूचना पर भी दृष्टि गई, उसमें लिखा था- 'आप यज्ञ नहीं कर सकते, न करें, आप यज्ञ के निमित्त राशि उक्त संस्था को भेज दें। आपको यज्ञ का फल मिल जायेगा।'

दूसरी बात ने और अधिक चौंकाने का काम किया, वह बात थी कि वहाँ जो रिकॉर्ड बज रहा था, उस पर वेद मन्त्रों की ध्वनि आ रही थी, प्रत्येक मन्त्र के अन्त में स्वाहा बोला जा रहा था। एक व्यक्ति यज्ञ-कुण्ड के पास आसन पर बैठकर घृत की आहुतियाँ दे रहा था। इस क्रम को देखकर विचार आया कि मन्त्र-पाठ का विकल्प तो मिल गया, मन्त्रों को रिकॉर्ड करके बजा लिया पर अभी आहुति डालने वाले का विकल्प काम में नहीं लिया। यदि वह भी ले लिया जाय तो यज्ञ का लाभ भी मिल जायेगा और उस कार्य में लगने वाले समय को अन्यत्र इच्छित कार्य में लगाने का अवसर भी मिल जायेगा। मेरे साथ संयोग से सार्वदेशिक सभा के मन्त्री प्रकाश आर्य भी थे। मैंने उनसे इस विषय पर प्रश्न किया और उनकी सम्मति जाननी चाही, तो वे केवल मुस्कुरा दिये और कहने लगे- मैं क्या बताऊँ।

इसके बाद इस बात की चर्चा तो बहुत हुई, परन्तु अधिकारी व संस्था-प्रमुख व्यक्ति से संवाद नहीं हो सका। संयोग से कुछ दिन पहले उस संस्था के प्रमुख से साक्षात्कार हुआ, सार्वजनिक मञ्च से मुझे उनसे अपनी शंकाओं का समाधान करने का अवसर मिल गया। जब मैंने दोनों बातें उनके सामने रखकर इसका अभिप्राय जानना चाहा तो उन्होंने अपने चालीस मिनट में इसका उत्तर इस प्रकार दिया। उन्होंने कहा- हमने कभी यह नहीं कहा और न ही कभी हमारा मन्तव्य ऐसा रहा कि हमारा यज्ञ किसी के व्यक्तिगत यज्ञ का विकल्प है। हमारे यज्ञ में सहयोग करने वाले व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से यज्ञ करने का लाभ तो नहीं मिलेगा। परन्तु उसके धन की सहायता से जिस घृत और सामग्री से हमारे यहाँ यज्ञ किया जा रहा है, उस सद्कर्म के पुण्य का लाभ उस व्यक्ति को भी मिलेगा। इसमें आपत्तिजनक कोई भी बात नहीं।

पहली बात व्यक्तिगत रूप से घर पर किया गया यज्ञ करने वाले के घर की परिस्थिति और वातावरण की शुद्धि का कारण होता है, वह दूर देश में जाकर करने पर घर की पवित्रता का कारण नहीं बन सकता। **दूसरी बात** यज्ञ केवल पर्यावरण शुद्धि का स्थूल कार्य मात्र नहीं है, यह मनुष्य के लिये उपासना का भी आधार है। इससे वेद-मन्त्रों के पाठ, विद्वानों के सत्संग और यज्ञ में किये जाने वाले स्वाध्याय से परमात्मा की उपासना भी होती है। यज्ञ का यह लाभ दूसरे के द्वारा तथा दूर देश में किये जाने पर केवल धन देने वाले यज्ञकर्त्ता या यजमान को प्राप्त नहीं हो सकता। किसी भी शुभ कार्य के लिये किसी के द्वारा दिये सहयोग, दान का पुण्य दाता को अवश्य प्राप्त होगा, क्योंकि वह उस दान का वह कर्त्ता है।

जहाँ तक दूसरे प्रश्न की बात है कि मन्त्र को रिकॉर्ड पर बजाकर आहुति देने से यज्ञ सम्पन्न होता है। उनका यह कहना ठीक है कि इतने विद्वान् या वेदपाठी कहाँ से लायें, जो पूरे दिन मन्त्र-पाठ कर सकें? रिकॉर्ड पर मन्त्र चलाकर अपने को तो समझा सकते हैं, परन्तु यह अध्यापक या विद्वान् का विकल्प नहीं हो सकता। संसार की सारी वस्तुयें

साधन बन सकती हैं, परन्तु कर्त्ता का मूल कार्य तो मनुष्य को ही करना पड़ता है। सम्भवत: आचार्य के उत्तर से सन्तुष्ट हुआ जा सकता था, परन्तु संस्था की ओर से जो लिखित स्पष्टीकरण प्राप्त हुआ, वह मौखिक स्पष्टीकरण से नितान्त विपरीत है।

स्पष्टीकरण में शास्त्रों की पंक्तियाँ उद्धृत करके यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि यज्ञ के लिये दान देने वाले को यज्ञ का फल मिलता है, प्रमाण के रूप में मनुस्मृति के "**अनुमन्ता.....**", योग-दर्शन के "**वितर्का हिंसादय.....**" आदि कई प्रमाण दिये गये हैं। वे शायद ये भूल जाते हैं कि संसार की किन्हीं भी दो अलग-अलग क्रियाओं का फल एक जैसा नहीं हो सकता। दान करने वाले व्यक्ति को दान का फल मिलेगा,ये भी हो सकता है कि अन्य कार्यों के लिये दान करने की अपेक्षा यज्ञ हेतु दान करने का फल अधिक अच्छा हो पर फल तो दान का ही होगा। दरअसल जब हम यज्ञ का फल केवल वातावरण की शुद्धि-मात्र ही समझ लेते हैं, तब इस तरह के तर्क मन में उभरने लगते हैं, और जब कहीं के भी वातावरण की शुद्धि को यज्ञ का फल मान बैठें तो तर्क और अधिक प्रबल दिखाई देने लगते हैं।

ऋषि दयानन्द ने जिस दृष्टि से यज्ञ का विधान किया है, वह अन्यों से भिन्न है। उन्होंने यज्ञ का विधान भौतिक शुद्धि के साथ-साथ अध्यात्म और वेद-मन्त्रों की रक्षा के लिये भी किया है, साथ ही केवल एक ही जगह और कुछ एक व्यक्तियों के द्वारा ही यज्ञ किये जाने से यज्ञ का भौतिक फल एक ही स्थान पर होगा। यदि इन्हीं सब सीमित परिणामों को यज्ञ का फल मान रहे हैं तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता है।

एक और तर्क ये दिया गया है कि संस्कार विधि में ऋषि दयानन्द ने पति-पत्नी के एक साथ उपस्थित न होने पर किसी एक के द्वारा ही दोनों की ओर से आहुति देने का विधान किया है, इससे सिद्ध होता है कि एक दूसरे के लिये यज्ञ किया जा सकता है। ऋषि दयानन्द ने ये विधान केवल इसलिये किया है, जिससे कि यज्ञ की परम्परा बनी रहे, न कि कर्मफल की व्यवस्था को परिवर्तित करने के लिये। एक और तर्क ये कि यदि कोई व्यक्ति भण्डारा, ऋषि लंगर आदि की व्यवस्था करता है, तो उसका फल दानी व्यक्ति को ही मिलना है, पकाने या परोसने वाले को नहीं। यहां पर ये महानुभाव अपने ही तर्क "**अनुमन्ता विशसिता.....**" का खण्डन कर गये, जिसमें उन्होंने कहा था कि हिंसा का अपराध माँस बेचने, खरीदने, सलाह देने वाले आदि सभी व्यक्ति द्वारा होता है। एक और तर्क सुनिये- राजा समयाभाव के कारण अपने माता-पिता की सेवा भृत्यों से कराता है। ऋषि दयानन्द व मनु के अनुसार राजा स्वयं राजकार्य में रहकर अग्निहोत्र व पक्षेष्टि आदि के लिये पुरोहित व ऋत्विज् को नियुक्त करे।

ऐसे कई उदाहरण दिये गये हैं, और अन्य भी दिये जा सकते हैं, पर इन सभी उदाहरणों में एक सामान्य सी बात ये है कि सभी जगह अति-आपात् की स्थिति या अन्य बड़ा दायित्व होने की स्थिति में अन्यों से यज्ञादि कराने का विकल्प है, वह भी तब, जबकि व्यक्ति मन में ईश्वर के प्रति आस्था, अध्यात्म, वेद की रक्षा के प्रति पूर्ण निष्ठा रखता हो और किसी अति-अनिवार्यता के कारण से यज्ञादि कार्य में असमर्थ हो। इस परिस्थिति में जिनको नियुक्त किया जाता है वे वेतन, पारिश्रमिक आदि लेकर कार्य करते हैं। यदि दान लेकर दाता के नाम से यज्ञ कराने वाले भी यज्ञ करने का पारिश्रमिक लेते हैं, और दानदाता वास्तव में यज्ञ, वेद, ईश्वर, अध्यात्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान् रहते हुये भी यज्ञ करने में पूर्ण अक्षम है तो शायद बात कुछ मानी जा सके, लेकिन उतने पर भी वायु तो वहाँ की ही शुद्ध होगी, जहाँ यज्ञ हो रहा है, वेद-मन्त्र तो उसे ही स्मरण होंगे जो कि मन्त्र बोल रहा है। ईश्वर व अध्यात्म में अधिक गति तो उसकी होगी जो आहुति दे रहा है।

इतने पर भी आप यदि अपनी बात को सैद्धान्तिक और सत्य मानना चाहें तो मानें, परन्तु यह अवश्य स्मरण रखना होगा कि ऋषि दयानन्द ने जिन अन्धविश्वासों का खण्डन किया था, वह सब मिथ्या और व्यर्थ सिद्ध हो जायेगा। एक बार सोनीपत आर्यसमाज के उत्सव पर वहाँ के कर्मठ कार्यकर्त्ता सत्यपाल आर्य जी ने अपने जीवन की घटना सुनाई, उन्होंने बताया कि लोकनाथ तर्क-वाचस्पति उन्हीं के गाँव के थे, वे स्वतन्त्रता संग्राम में आन्दोलन करके जेल गये। उस धरपकड़ में उनके गाँव का पौराणिक

पण्डित भी धर लिया गया। जेल में तो वह रहा, परन्तु छूटते समय लोकनाथ जी से बोला, इतने दिनों में तुमने कुछ कमाई की या नहीं? लोकनाथ जी बोले- जेल में कैसी कमाई करेंगे? तो पण्डित ने कहा- मैंने तो इन दिनों अपने सेठों के नाम पर इतना जप किया है, जाते ही पैसे ले लूंगा। तब आप क्या करेंगे?

सारे पौराणिक पण्डित यही तो करते हैं। इनको जो लोग दान देंगे, तो क्या पण्डित जी के कार्य का पुण्य फल उन भक्तों को नहीं मिलेगा? फिर ईसाई लोग स्वर्ग की हुण्डी लेते थे, तो क्या बुरा करते थे, दान का पुण्य तो स्वर्ग में मिलेगा ही। फिर श्राद्ध का भोजन, गोदान, वैतरणी पार होना, यज्ञ में पशुबलि आदि सब कुछ उचित हो जायेगा।

धार्मिक कार्य स्वयं करने, दूसरों से कराने और कराने की प्रेरणा देने से निश्चित रूप से पुण्य मिलेगा, परन्तु स्वयं करने का विकल्प-करने की प्रेरणा देना और दूसरों को सहायता देकर कराना नहीं हो सकता। मेरा भोजन करना आवश्यक है, मुझे दूसरों को भी भोजन कराना आवश्यक है। मेरे भोजन करने का विकल्प दूसरे को प्रेरणा देना और सहायता देकर कराना नहीं होता। मेरे घर कोई आता है तो उसे भोजन कराना ही है। मेरे घर कोई नहीं आया, तो मेरे संस्कार बने रहें, इसलिये मैं कहीं किसी को भोजन कराने की सहायता देता हूँ, वह स्वयं कराये गये भोजन का विकल्प नहीं है। एक के अभाव में अन्य के भोजन की बात है।

यज्ञ, संस्कार आदि का प्रयोजन ऋषि ने **शरीरात्म विशुद्धये** कहा है। दूर किये गये यज्ञ से या दूसरे के यज्ञ से मेरे शरीर-आत्मा की शुद्धि नहीं होती। किसी की तो होती है, उससे दूसरे का भला करने का लाभ होगा, पर आत्मलाभ की बात इससे पूर्ण नहीं होती। प्राचीन सन्दर्भ से देखें तो ऋषि का यज्ञ-विधान परम्परा से हटकर है। पुराने समय के यज्ञ चाहे राजा के हों या ऋषि के, सभी व्यक्तिगत रूप से किये जाने वाले रूप में मिलते हैं। ऋषि की उहा ने यज्ञ को एक सामूहिक रूप दिया है, जिसमें यजमान के आसन पर बैठा व्यक्ति पूरे समूह का प्रतिनिधि है, यह यज्ञ सामाजिक संगठन का निर्माण करने वाला होता है।

यज्ञ में वेद-मन्त्र पढ़ने का लाभ बताते हुए ऋषि लिखते हैं-

जैसे हाथ से होम करते, आँख से देखते और त्वचा से स्पर्श करते हैं, वैसे ही वाणी से वेद-मन्त्रों को भी पढ़ते हैं, क्योंकि उनके पढ़ने से वेदों की रक्षा, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना होती है तथा होम से जो फल होते हैं, उनका स्मरण भी होता है। वेद मन्त्रों का बार-बार पाठ करने से वे कण्ठस्थ भी रहते हैं और ईश्वर का होना भी विदित होता है कि कोई नास्तिक न हो जाये, क्योंकि ईश्वर की प्रार्थनापूर्वक ही सब कर्मों का आरम्भ करना होता है।

वेद-मन्त्रों के उच्चारण से यज्ञ में तो उसकी प्रार्थना सर्वत्र होती है। इसलिये सब उत्तम कर्म वेद-मन्त्रों से ही करना उचित है। - ऋग्वेद भूमिका पृ. ७२१

यह बात इस कारण लिखनी आवश्यक हुई, जिससे जनसामान्य यथार्थ से परिचित हों। किसी के दान से किसी को क्यों द्वेष हो तथा किसी की प्रसिद्धि से ईर्ष्या का क्या लेना? इस अवसर पर संस्कृत की एक उक्ति सटीक लगती है, इसलिये लेख दिया-

का नो हानिः परकीयां खलुचरति रासभोद्राक्षम्।
तथापि असमञ्जसमिति ज्ञात्वा खिद्यते चेतः।।

- धर्मवीर

डॉ. धर्मवीर जी को श्रद्धाञ्जलि देने हेतु अधिक-से-अधिक संख्या में ऋषि मेले में पधारे।

ऋषि मेला – २०१६

स्थान – ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

कार्यक्रम

शुक्रवार, दिनांक ०४ नवम्बर, २०१६

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ-आसन-प्राणायाम-ध्यान-सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ।

०९.०० से ०९.३० तक – वेद प्रवचन
ब्रह्मा –पं. सत्यानन्द वेदवागीश

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से १२.३० तक – **ध्वजारोहण व उद्घाटन सत्र**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन, विश्राम

१४.०० से १७.०० तक –**राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज की भूमिका – भजन-प्रवचन-सम्मान**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ, सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **धर्मान्तरण समस्या एवं निवारण – भजन-प्रवचन**

शनिवार, दिनांक ०५ नवम्बर, २०१६

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ-आसन-प्राणायाम-ध्यान-सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ।

०९.०० से ०९.३० तक – वेद प्रवचन
ब्रह्मा – पं. सत्यानन्द वेदवागीश

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से १२.३० तक – **भजन-प्रवचन-सम्मान**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **ऋषि दयानन्द के विचारों की प्रासंगिकता – भजन-प्रवचन**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ-सन्ध्या व भोजन – कृतज्ञता सम्मेलन

२०.०० से २२.०० तक – **भजन-प्रवचन**

रविवार, दिनांक ०६ नवम्बर, २०१६

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ-आसन-प्राणायाम-ध्यान-सन्ध्या

०७.०० से ०९.३० तक – यज्ञ, वेदपाठ, **पूर्णाहुति**,

०९.३० से १०.०० तक – वेद प्रवचन
ब्रह्मा–पं. सत्यानन्द वेदवागीश

१०.०० से १०.३० तक – प्रातराश

१०.३० से १२.३० तक – **भजन-प्रवचन**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **गुरुकुल सम्मेलन भजन एवं प्रवचन**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ-सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **धन्यवाद व समापन सत्र**

वेद–गोष्ठी

विषय : ऋषि दयानन्द के दर्शन की वेदमूलकता

०४ नवम्बर : उद्घाटन सत्र – ११.०० से १२.३० तक
: द्वितीय सत्र – १४.३० से १७.०० तक

०५ नवम्बर : तृतीय सत्र – १०.०० से १२.३० तक
: चतुर्थ सत्र – १४.३० से १७.०० तक

०६ नवम्बर : समापन सत्र

कार्यक्रम में आवश्यकतानुसार परिवर्तन संभव है।

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

पं. लेखराम जी की वीरोचित मृत्यु:- धर्मवीर पं. लेखराम जी के शानदार जीवन तथा गौरवपूर्ण बलिदान पर आज पर्यन्त कादियानियों ने जो कुछ अनाप-शनाप व निराधार बातें लिखी हैं, उन सबका उत्तर एक ग्रन्थ में लिखकर छपने भेज दिया है। दिल्ली से एक प्रबुद्ध आर्य बन्धु ने मिर्ज़ाइयों द्वारा प्रचारित अंग्रेजी में लिखी गई कुछ सामग्री अवलोकनार्थ भेजी थी। व्यस्तताओं के कारण मैं इसे पढ़ न पाया। अब वह मिल नहीं रही। उसका शीर्षक कुछ ऐसा था-"Miserable Death of Lekhram." अर्थात् लेखराम की दु:खद मृत्यु। उस सामग्री में कुछ भी नई बात नहीं हो सकती, तथापि हमारा निवेदन है कि पण्डित जी के वीरतापूर्ण बलिदान पर आज तक सहस्रों लेख छप चुके हैं। सब ने पण्डित जी के शौर्य, धर्म-भाव, अटल ईश्वर विश्वास की दिल खोलकर प्रशंसा ही की है। पण्डित जी वेद मन्त्रों का जप करते हुए-प्यारे प्रभु का स्मरण करते हुए देह का त्याग कर गये। किसी ने नहीं लिखा कि पं. लेखराम को देह का त्याग करते हुए कोई दु:ख हुआ।

मिर्ज़ा गुलाम अहमद ने स्वयं लिखा है कि अपने बलिदान से पूर्व जब पण्डित जी लाहौर स्टेशन के समीप एक मस्जिद में मिर्ज़ा से धर्म-चर्चा करने आये तो नबी ने नमाज का बहाना बनाकर जान छुड़ाई थी। नबी ने एक ग्रन्थ में लिखा है कि अपने बलिदान से कोई दो मास पूर्व लेखराम कादियाँ आया था। मिर्ज़ा को इल्हामी कोठे से बाहर निकलकर पण्डित जी का सामना करने का साहस ही न हुआ। ऐसा साहसी प्राणवीर, सत्यनिष्ठ और धर्मवीर था पं. लेखराम।

अब मिर्ज़ाइयों को हम याद दिलाते हैं कि क्या उनके नबी ने अमृतसर में मुसलमानों के द्वारा प्रचण्ड विरोध के समय सरकार की शरण नहीं ली थी? क्या पुलिस ने मिर्ज़ा को अमृतसर से सुरक्षित निकालकर कादियाँ नहीं पहुँचाया था?

मिर्ज़ा की मृत्यु का वर्णन मिर्ज़ा बशीर अहमद एम.ए. ने 'सीरत-उल-महदी' में किया ही है। हिम्मत है तो वह वृत्तान्त प्रचारित कर दो। क्या लाहौर से बाजे-गाजे के साथ-सुखपूर्वक आप लोग शव को कादियाँ ले आये? मुसलमानों का प्रचण्ड विरोध भूल गये? तब पुलिस सहायता न करती तो और कितनी दुर्गति होती? 'मुहम्मदिया पाकेट बुक' के विद्वान् मौलाना लेखक की पुस्तक का पृष्ठ ४७८ एक बार फिर पढ़कर प्रचारित कर दो। वहाँ लिखा है:-

मर्ज़ हैज़ा थीं हो लाचार। मिर्ज़ा मोया मंगलवार।।

२६ मई सन् १९०८ को हैज़ा के भीषण रोग से एक बड़ा दस्त आया और नाड़ी सर्वथा बन्द हो गई। फिर जो उपद्रव और उत्पात हुआ, वह आप ही बता दें या मौलवी सना उल्ला जी के ग्रन्थों को उद्धृत कर दें। सब पता चल जायेगा कि नबी की Miserable Death दु:खद मृत्यु कैसे हुई थी। आप चाहेंगे तो और सेवा करने को हम तैयार हैं।

और फ़रिश्ते पकड़े गये:- पं. लेखराम जी के हत्यारे को मुसलमान तो खुलकर छलिया, कपटी व काफिर घोषित करते आ रहे हैं। मिर्ज़ा व मिर्ज़ाई आज भी उसे फरिश्ता बताते हैं। यह कहा जाता है कि न जाने हत्यारा आसमानों में ऊपर उठ गया या भूमि में समा गया। मिर्ज़ा ने यह भी लिखा है कि अल्लाह के फ़रिश्ते ने कादियाँ उनके इल्हामी कोठे पर तशरीफ़ लाकर पं. लेखराम जी का पता पूछा था। एक और आर्य का भी पता पूछा जिसका नाम मिर्ज़ा भूल गये। नबी तथा सारे मिर्ज़ाई आज तक हत्यारे को फरिश्ता बताने की तोता रटन लगाते आ रहे हैं, परन्तु सच फूट-फूट कर मुख से निकल आता है। नबी लिखता है, "नहीं मालूम कि आया वो आदमी था या फ़रिश्ता जो आसमान पर चढ़ गया।"

पं. लेखराम सरीखे निर्भीक आप्त पुरुष को मारना क्या कठिन था? इन्दिरा गाँधी जैसी सशक्त लीडर अंगरक्षकों से घिरी हुई हत्यारों का निशाना बन गई तो वीर लेखराम की हत्या क्या आश्चर्य का विषय है? जब सन् १९२६ में स्वामी श्रद्धानन्द की दिल्ली में हत्या कर दी गई तब मिर्ज़ाई फूटे कि फरिश्ते ने जिस दूसरे व्यक्ति का नाम बताया था,

वह स्वामी श्रद्धानन्द ही था। इस बार शूरवीर धर्मसिंह व धर्मपाल स्नातक ने हत्यारे को धर दबोचा। धर्मपाल फरिश्ते की छाती पर चढ़कर बैठ गया। वह आसमान पर न चढ़ सका। फाँसी पर चढ़ाया गया।

२६ सितम्बर सन् १९२७ को मिर्ज़ाइयों की कृपा से ख़ुदाबख्श पहलवान ने महाशय राजपाल को छुरा मारा। तभी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने उसे कसकर पकड़ लिया। इस फ़रिश्ते को सात वर्ष तक जेल में रहना पड़ा। नौ अक्टूबर सन् १९२७ को एक और हत्यारे ने स्वामी सत्यानन्द जी को महाशय राजपाल समझकर छुरा मार दिया। श्री नानक चन्द आर्यवीर ने लपककर इस फ़रिश्ते को जकड़-पकड़ लिया, वह फिर भी भाग निकला, परन्तु महाशय चुन्नीलाल ने पीछे भागकर उसे पकड़ लिया। उसे १४ वर्ष का कारावास दण्ड मिला।

छः अप्रैल सन् १९२९ को इल्मुद्दीन नाम के हत्यारे ने महाशय राजपाल पर प्राणघातक वार किया। वीर विद्यारत्न आदि आर्यों ने उसे भी पकड़ लिया। यह फ़रिश्ता भी फाँसी पर चढ़ाया गया। इस फ़रिश्ते के चमत्कारों की कहानी बड़ी लम्बी है। हत्यारे को सन् १८९७ में पं. लेखराम जी की हत्या करके लाहौर से दिल्ली पहुँचते-पहुँचते २९ वर्ष लग गये। जैसे-कैसे उसने दूसरे आर्य (स्वामी श्रद्धानन्द जी) का पता करके छल से उनकी हत्या कर दी। इस बार न तो वह भूमि में समा सका और न आसमानों पर चढ़ सका। उसे आर्यों ने पकड़ लिया और वह फाँसी पर चढ़ाया गया। फिर किसी ने उसके फ़रिश्ता होने की रट नहीं लगाई। अल्लाह मियाँ के इल्हाम धरे के धरे रह गये। पं. लेखराम जी की गौरवपूर्ण मृत्यु-अमर बलिदान विषयक गौरव गाथा के इस अध्याय को संक्षेप से 'परोपकारी' में देना हमने आवश्यक जाना। मिर्ज़ाइयों के दुष्प्रचार का एक-एक आर्य अब जोरदार खण्डन कर सकेगा। रक्तसाक्षी ग्रन्थ में यह कहानी सविस्तार दी गई है।

वृक्षों की योनि व मानव योनि:-पूजनीय पं. गणपति जी शर्मा के एक प्रसिद्ध शास्त्रार्थ से वृक्षों की योनि व मानव-योनि का तड़प-झड़प में भेद बताते हुए लिखा था कि मनुष्य का कोई अंग कट जाये तो दोबारा उँगली, हाथ, पैर व टाँग आदि नहीं उगती, परन्तु वृक्षों की शाखायें व टहनियाँ फिर फूट पड़ती हैं। मनुष्य के शरीर में कहीं चोट मारो, सूई चुभो दो तो सारा शरीर सिहर उठता है, परन्तु एक फूल तोड़ो तो शेष पौधे पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। आम का, जामुन का अथवा पीपल की बहुत बड़ी टहनी काट लो, शेष शरीर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इससे सिद्ध हुआ कि वृक्ष आदि क्लोरोफॉर्म जैसी स्थिति में हैं।

इस तड़प-झड़प पर दिल्ली के एक विद्वान् भाई ने परोपकारी में यह लिखकर भेजा है कि मैंने पं. गणपति जी के उस शास्त्रार्थ का पता नहीं लिखा कि वह कहाँ हुआ था? यह आनन्ददायक बात है कि हमारे विद्वान् भाई ने तड़प-झड़प को ध्यान से पढ़ा है। उनके प्रश्न का मैं स्वागत करता हूँ। इससे बहुतों का लाभ होगा। पूज्य पं. गणपति जी शर्मा का और समाज का गौरव बढ़ेगा।

पहले भी कभी लिखा था और उस तड़प-झड़प के साथ या बाद में यह लिखा था कि झालावाड़ के शास्त्रार्थ में यह तर्क दिया गया था। चुरु से छपी एक 'स्मारिका' में मेरे लेख में पूरा प्रमाण, पत्रिका का मास, वर्ष, पृष्ठ संख्या सब दी थीं। अब याद नहीं है। समय मिलेगा तो फिर खोजकर बात दूँगा। 'सद्धर्म प्रचारक' में वह शास्त्रार्थ छपा था। हमारे विद्वान् भाई जानते हैं कि मैं बिना प्रमाण के कभी नहीं लिखता।

श्रद्धेय पं. गणपति जी के कथन की पुष्टि में एक नया ज्वलन्त प्रमाण देता हूँ। हमारे निवास की वाटिका में दस बारह फालसे के पेड़ हैं। इस बार मई-जून में तीन-चार पर फल आये। छः-सात पर फल नहीं आये। मैंने माली को कहा कि इनकी कटाई ठीक नहीं हुई। फल नहीं आये। उसने कहा कि इस वर्ष लू अत्यधिक है इस कारण फल नहीं आये। ये पौधे छोटे हैं। अगले वर्ष आयेगा। मैं अजमेर से लौटा तो माली ने उन पेड़ों की कटाई कर दी। एक सप्ताह में उन पर फूल आने लग गये। गर्मी कुछ दिन पड़ेगी तो अच्छे फल देंगे। वृक्षों में तो ऐसा देखा जाता है। मनुष्य-योनि में तो कटाई-छँटाई से मनुष्य अंगहीन व विकलांग बन जाता है। पेड़ों व मनुष्य-योनि में यह स्पष्ट भेद सबके सामने हैं। गन्ने आदि की कटाई करके किसान दो-दो, तीन-तीन वर्ष तक उससे लाभ लेते हैं। हर बार

गन्ना नहीं बोना पड़ता। आशा है, विद्वान् भाई इस पर विचार करेंगे।

ऋषि दयानन्द विषयक वे दस्तावेज:- आर्य भाई विशेष रूप से 'परोपकारी' के प्रेमी पाठक देश-विदेश से खोजे गये नये दस्तावेजों के आधार पर लिखी गई हमारी नई पुस्तक की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम भी जानते हैं 'जीवन पल-पल क्षण-क्षण बीता जावे' यह पुस्तक हमारी प्राथमिकता है। सब दस्तावेज एक साथ तो प्राप्त नहीं हुए। अब भी कुछ दस्तावेज स्वदेश से मिले हैं। अबोहर पहुँचने में कुछ सप्ताह लगेंगे। इसी वर्ष यह पुस्तक परोपकारिणी सभा को सौंप दी जायेगी। छप भी जायेगी। आयु का भले ही ८६ वाँ वर्ष चल रहा है, परन्तु मैं एक साथ छ: पुस्तकों के लेखन व सम्पादन का कार्य कर रहा हूँ। ऋषि मिशन का सेवक-पं. लेखराम का सैनिक हूँ। वेतनभोगी किसी का नौकर नहीं हूँ। दिन-रात ऋषि के मिशन की सेवा मेरा सर्वस्व है। पारिश्रमिक के भरोसे पर कार्यरत नहीं हूँ। मेरा प्रयास यही है कि यह पुस्तक अब शीघ्र पूरी हो जाये।

आर्यसमाजी झूम उठेंगे:- संसार आशा पर जीता है। मैं बहुत आशावादी हूँ। हाँ, कभी अत्यधिक आशायें लगाना भी व्यावहारिक नहीं होता। पं. लेखराम जी विषयक अब तक का सबसे बड़ा ग्रन्थ आर्यवीरों को लिखकर दे दिया है। यह प्रकाशनाधीन है। अभी-अभी विदेश से पण्डित जी विषयक कुछ पुराने लेख व पुस्तकें एक सज्जन ने हमें पहुँचाने का आश्वासन दिया है। अभी यह नहीं कहा जा सकता कि ये स्रोत मेरे लिये नये होंगे या मेरे देखे-पढ़े होंगे। यदि नई सामग्री होगी तो प्रकाशनाधीन ग्रन्थ में केवल २-४ पृष्ठ ही बढ़ाऊँगा। शेष सामग्री ठोस व उपयोगी होगी तो फिर श्री यशवन्त जी, श्री प्रेमशंकर मौर्य जी, श्री इन्द्रजीत जी चामधेड़ा, श्री ओम् मुनि जी के सुपुत्र अथवा कन्हैयालाल जी आर्य गुड़गाँवाँ को एक अच्छी पुस्तक लिखकर दे दूँगा। पं. लेखराम जी के मिशन के लिये घोर तपस्या करने वाले, यातनायें सहने वाले पं. शान्तिप्रकाश जी, पं. देव प्रकाश जी व पूज्य पं. भगवद्दत्त जी को समर्पित करके प्रकाशनार्थ दे दूँगा। आशा तो यही है कि यह सामग्री नई ही होगी। आर्यसमाज इसे पाकर झूम उठेगा। इन आर्यवीरों को यह कार्य हाथ में लेकर आनन्द होगा। ऋषि के दीवाने झूम उठेंगे।

परोपकारिणी सभा का शोध-कार्य:- कभी एक शोध-शिरोमणि ने परोपकारिणी सभा के शोध-कार्य पर उँगली उठाकर अपना ही उपहास उड़ाया। जो किसी भी महापुरुष की मनमानी जन्मतिथि व जन्म का वर्ष निर्धारित कर देता है, उसकी शोध विषयक चिन्ता तो चिन्ता का ही विषय है। परोपकारिणी सभा के मन्त्री लम्बे समय से शाहपुरा के राजपरिवार की अगली पीढ़ी को समाज से जोड़ने में लगे थे। हर्ष का विषय है कि वे इस उद्देश्य में सफल हुए हैं। हम कई व्यक्ति राजपरिवार से एक सप्ताह में दो बार मिलकर आये हैं। मन्त्री जी ने उन्हें बताया कि देश के एक प्रतिष्ठित पत्र के पुराने अंकों में श्री उम्मेदसिंह जी के राजतिलक तथा शाहपुरा राज्य पर कई लेख, चित्र व दुर्लभ सामग्री सभा को प्राप्त हुई है। इसे प्रकाश में लाना है।

उन्होंने पूछा, "ये पुराने अंक कहाँ से मिले? कैसे प्राप्त हुये?" श्री मन्त्री जी ने मेरी ओर संकेत करते हुए कहा, "ये गत सत्तर वर्षों से यही कार्य तो कर रहे हैं।"

राजपरिवार की इच्छा है कि इस सामग्री को पुस्तक रूप में अति शीघ्र प्रकाशित किया जावे। जब राजपरिवार आर्थिक व्यवस्था कर देगा, उस पुस्तक के लेखन व प्रकाशन का मार्ग प्रशस्त हो जावेगा। श्री प्रो. सुधारक जी, पं. भगवान् स्वरूप जी तथा पूज्य उपाध्याय जी शाहपुरा रहे थे। सौभाग्य से ९६ वर्षीय श्री सोहनलाल शारदा अभी हमारे मध्य हैं। उनकी स्मरण शक्ति चकित करने वाली है। प्रो. सुधारक जी व उपाध्याय जी तब शाहपुरा में कहाँ रहते थे, यह केवल शारदा जी ही बता सकते हैं। उनसे पूछताछ करके एक अच्छी पुस्तक बन जायेगी। इस बार के ऋषि-मेला पर दस्तावेजों की पहली प्रदर्शनी तथा साहित्य प्रकाशन को देखकर आर्य जनता को सभा के शोध का बोध होगा। परोपकारी के प्रत्येक अंक में नई-नई जानकारी दी जाती है। वार-प्रहार का उत्तर परोपकारी ही देता है। श्री शंकराचार्य तथा नारायण स्वामी मत वाले भी सभा के शोध का लोहा मानते हैं। विश्व प्रसिद्ध लेखक श्री अनवर शेख व श्री शहरयार शीराजी के पत्र सभा के ठोस शोध-कार्य के

ज्वलन्त प्रमाण हैं। आर्य जनता ये पत्र पढ़ेगी तो.....आर्य मात्र को इस बात पर गौरव होना चाहिये कि श्री अनवर शेख जी परोपकारी के प्रशंसक व प्रेमी थे।

मनुष्य के बनाये भगवान्:- मनुष्य अपनी इच्छा के भगवानों को गढ़कर फिर उनसे मन्नतें पूरी करवाने के नाटक करता है। दूर-दूर की यात्रायें इस उद्देश्य से करता है। ये यात्रायें भी अनेक बार जानलेवा सिद्ध होती हैं। मनुष्य के बनाये भगवान् बाढ़ में बहते देखे गये। जिन मन्दिरों तीर्थों से मन्नतें माँगी जाती हैं, वे उत्तराखण्ड में बाढ़ में बहते देखे गये। अमरनाथ यात्रियों की रक्षा बर्फानी बाबा तो नहीं कर पाते, सेना को उन्हें बचाने के लिए आगे आना पड़ता है। धन्य हैं वे हिन्दू संस्थायें जो लोगों को इन यात्राओं के लिए प्रोत्साहित करती हैं। जड़-चेतन का भेद नहीं कर पातीं। विज्ञान के साधनों का लाभ न उठाकर काँवड़िये हरिद्वार पैदल जाते हैं। उनकी सुरक्षा व यातायात की जटिल समस्या का समाधान सरकार को करना पड़ता है। इस बार भी कई काँवड़िये दुर्घटनाग्रस्त हुए। उनके निधन पर अश्रुपात करके हिन्दू नेता एक परम्परा निभा देते हैं। कश्मीर में बर्फानी बाबा के जयकारे लगाने वालों पाकिस्तान जिन्दाबाद व भारत जिन्दाबाद के नारे लगाने पड़े। मनुष्य के बनाये भगवानों को बेबसी से मनुष्य ने क्या सीखा? नकली भगवान् कश्मीर की समस्या का समाधान तो कर नहीं सके, मनुष्य की मन्नतें क्या पूरी करेंगे? वैष्णव देवी के यात्री आतंकवादियों ने मार डाले। हिन्दू ने क्या सीखा? सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् की उपासना छोड़कर कब्रों की, मुर्दों की पूजा के लिये भीड़ लगी देख लो। हर दस किलोमीटर पर हिन्दू का नया भगवान् मिल जाता है। एकेश्वरवाद का आन्दोलन कौन छेड़ेगा?

''न जात पर न पात पर'':- इन्दिरा जी ने कभी नारा दिया था 'गरीबी हटाओ।' फिर नारा दिया 'न जात पर न पात पर इन्दिरा जी के हाथ पर।' अब उन्हीं की कांग्रेस शीला दीक्षित को उ.प्र. में ब्राह्मणों को रिझाने के लिये आगे ला रही है। कई हिन्दू संगठन व संस्थायें अपने जन्म से लेकर आज पर्यन्त एक जाति विशेष की जकड़-पकड़ में हैं। शंकराचार्यों के गीत गाने वाले उनको साधारण हिन्दुओं के साथ लंगर में पंक्ति में बैठकर भोजन करवाकर तो दिखायें! मोदी जी जाति-पांति के विरुद्ध तो बोलते हैं, वे आज पर्यन्त काशी में अंधकार, जातिवाद, नारी से भेदभाव को चुनौती देने वाले आर्यसमाज के कन्या गुरुकुल में जाने का साहस नहीं दिखा सके। श्री श्री रविशंकर की सभा में वेदपाठ तो हुआ, परन्तु क्या उनमें ब्राह्मणेतर वेदपाठी कोई बुलाया गया? क्या वे ब्राह्मण कुल उत्पन्न नहीं थे? मोदी जी जानते हुए भी कुछ न कह पाये।

-वेद सदन, अबोहर (पंजाब)-१५२११६

न्याय दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के द्वारा संचालित 'महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल' ऋषि उद्यान, अजमेर में वर्षों से संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का अध्यापन कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इसी क्रम में '**महर्षि गौतम**' द्वारा प्रणीत '**न्याय दर्शन**' का **आचार्य श्री सत्यजित् जी** द्वारा १ मार्च २०१६ से विधिवत् नियमित रूप से अध्यापन कराया जावेगा। यह दर्शन ९-१० महीनों में सम्पूर्ण हो जावेगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। समय-समय पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार यथायोग्य सहयोग कर सकते हैं। माताओं व बहनों की निवास व्यवस्था पृथक् रहेगी। पढ़ने के इच्छुक आर्यजन कृपया, सम्पर्क कर पूर्व स्वीकृति ले लेवें।

सम्पर्क सूत्र - आचार्य सत्यजित् जी - ०९४१४००६९६१, समय रात्रि (८.४५ से ९.१५)

पता - ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर - ३०५००१ (राज.) **ई-मेल** - styajita@yahoo.com

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १८ से २५ जून, २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com **-संयोजक**

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

मेरे पिता जी

- तपेन्द्र कुमार आई.ए.एस. (से. नि.)

मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मैं अपने पिताजी के समान कट्टर आर्यसमाजी नहीं हूँ और न ही उनके समकक्ष सिद्धान्तों का परिपालन ही अपने जीवन में कर पाया हूँ। उन्होंने साधारण परिवार से होते हुए भी मेरी आजीविका एवं अपने परिवार का ध्यान न रखते हुए-मुझे गुरुकुल में पढ़ने के लिए भेजा, जिससे मैं आर्य बन सकूं, एक अच्छा 'इन्सान' बन सकूँ । उन्होंने वित्तीय आवश्यकताओं की बजाय मुझे सद्गुणी बनाने के लिए गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में भेजा। जबकि मेरे साथ पढ़ने वाले छात्र अच्छे कॉलेजों में गये। उपहास में कहा गया कि गुरुकुल में पढ़कर विवाह संस्कार कराना सीख जायेगा, तो पिताजी ने मुझे भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाने की प्रेरणा दी और उन्हीं के आशीर्वाद से संस्कृत पढ़ा हुआ एक वेदालंकार आई.ए.एस. बन गया।

सिद्धान्तों के धनी मेरे पिता स्व. रघुवरसिंह सुधारक उस समय विधुर हो गये थे, जब मेरी उम्र मुश्किल से चार साल रही होगी। मेरे ननिहाल से अत्यधिक आग्रह होते हुए भी उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। मेरे पिताजी ने आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं होने की स्थितियों में भी दैनिक-यज्ञ किया। वे कहा करते थे कि जब से यज्ञ करना प्रारम्भ किया, तब से घर में घी समाप्त नहीं हुआ। उन्होंने कभी बिना सन्ध्या किये भोजन नहीं किया तथा कभी खादी की धोती व कुर्ते के सिवाय कोई वस्त्र धारण नहीं किया। गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय से एक बार मुझे भाषण-प्रतियोगिता के लिए एक बड़े विश्वविद्यालय में जाना था, मेरे पास कोट नहीं था। पिताजी को कोट के लिए कहा, उन्होंने मना नहीं किया, परन्तु बोले-कपड़े भाषण नहीं करते। फिर भी कोट बनाना हो तो बना लो, लेकिन ध्यान रहे, अपने पैरों पर खड़े होने के बाद इससे कई गुना अच्छा कोट पहनना होगा-जो आज की सादगी से ही सम्भव होगा।

ईश्वर विश्वासी व निडर इतने कि सारी जिन्दगी रास्ते के पास बैठक के बरामदे में सोते रहे (हमारी बैठक गाँव के एक किनारे पर थी।)सत्य के आग्रही ऐसे कि युवावस्था में एक जातीय पंचायत में बड़े-बड़ों के विरोध की परवाह किये बिना एक महिला के अधिकारों के लिए भिड़ गये तथा उसके अधिकार दिलाकर ही माने। युवावस्था में हुक्का पीते थे, एक दिन छोड़ा तो सारी जिन्दगी बीड़ी, सिगरेट, हुक्का आदि नहीं पीया और सैकड़ों लोगों की हुक्के-बीड़ी की लत छुड़ायी। जीवनयापन के लिए जो भी व्यापार किया उसमें पवित्रता इतनी कि चाहे हानि हो जाये, पर झूठ बोल कर पैसा नहीं कमाना। उनका दृढ़ विश्वास था कि परिश्रम और ईमानदारी के रास्ते पर चलने से कोई हानि नहीं होती। शायद यह सत्य भी था, क्योंकि १९५४ में हमारी दो मंजिली बैठक पक्की ईंटों से बनी थी तथा उस पर प्लास्टर था।

आर्य समाज के प्रचार की ऐसी इच्छा कि कुछ समय के लिए भजनोपदेशक कार्य भी किया, बाद में स्वास्थ्य व अन्य कारणों से छोड़ना पड़ा। एक बार बीमार हुए तो सहारनपुर के बड़े अस्पताल में भर्ती हो गये। डॉक्टरों ने कहा-बहुत कमजोरी है, अण्डे खाया करो, जल्दी ठीक हो जाओगे। डॉक्टर को झिड़क दिया और बोले-मृत्यु प्रिय है, सिद्धान्त तोड़ना नहीं। तुम यहाँ के मरीजों में जिसे बलवान् समझते हो उससे मेरा मुकाबला करा लो। कई माह अस्पताल में रहते हुए भी नित्य-कर्म व यज्ञ नहीं छोड़ा।

मैंने उत्तर प्रदेश प्रशासनिक सेवा की परीक्षा दी तथा लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। प्रबुद्ध लोगों को पता चला तो पिता जी से कहा-इण्टरव्यू के लिए सिफारिश करा दो, यह अवसर बार-बार नहीं आता। उनके एक मित्र पिता जी को लेकर उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष महोदय के एक नजदीकी रिश्तेदार के घर गये। पता चला कि चालीस हजार रुपये का इन्तजाम करना पड़ेगा। मित्रों ने आग्रह किया-उधार आदि ले लो, परन्तु मौका हाथ से न जाने दो। पिताजी ने दृढ़ शब्दों में इंकार कर दिया और बोले-जिसकी नींव ही बेइमानी पर खड़ी हो, ऐसी बड़ी नौकरी हमें नहीं चाहिये। मैं साक्षात्कार में

फेल हो गया। ईश्वर-विश्वासी ऐसे बोले-अब पी.सी.एस. नहीं, आई. ए. एस. की परीक्षा दो, वहाँ भ्रष्टाचार नहीं है- पास हो जाओगे। परीक्षा दी, मैं पास भी हो गया।

मेरे जयेष्ठ भ्राता डॉ. जगदेव सिंह विद्यालंकार की कृपा से मुझे हरियाणा के एक डिग्री कॉलेज में संस्कृत प्रवक्ता की नौकरी मिल गयी। प्रवक्ता का वेतनमान आई.ए.एस. के वेतनमान के बराबर सात सौ रुपये था। मैंने पी.जी.कॉलेज बड़ौत में संस्कृत प्रवक्ता हेतु प्रार्थना-पत्र दिया, साक्षात्कार-पत्र आ गया। प्राचार्य महोदय से स्वीकृति माँगी तो मना कर दिया। मैं उनके पीछे-पीछे बस स्टैण्ड तक आया तथा बहुत निवेदन किया। प्राचार्य महोदय बोले हम ने तो २० साल में पी.जी. कॉलेज के लिए सोचा, तुम अभी से जाना चाहते हो। मैंने उनके सामने ही आवेश में वह कागज फाड़कर फेंक दिया तथा साक्षात्कार के लिए चला गया। जाने पर पता चला कि साक्षात्कार स्थगित हो गया। वापस आया तो कारण बताओ नोटिस मिला। मैंने पिताजी को सारी स्थिति बतायी। उन्होंने कहा- यदि कोई राष्ट्रपति बना दे ओर कहे कि आगे नहीं बढ़ो तो मंजूर नहीं, अपने घर आ जाओ, इतने पैसे यहीं कमा लेंगे। यह वह समय था जब घर की आर्थिक हालत भी ठीक नहीं थी।

भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन होने के लगभग तीन साल बाद मेरा विवाह हुआ। मंसूरी अकादमी से ही बड़े-बड़े रिश्ते आने शुरु हो गये थे। लेकिन गुण-कर्म-स्वभाव को प्राथमिकता देने वाले मेरे पिताजी न तो किसी दबाव में आये और न हीं लालच में। बिना दहेज के विवाह हुआ। मैं अकेली सन्तान हूँ, फिर भी वे मेरी बारात में नहीं गये। स्पष्टत: बारात छोटी थी। दिन में बारात गयी, विवाह संस्कार के उपरान्त शाम तक वापस घर आ गये। कई रिश्तेदारों ने समझाया-दहेज माँग करना गलत है, लेकिन लड़की वाला यदि अपनी इच्छा से देता है तो यह दहेज नहीं। पिताजी का स्पष्ट उत्तर था-कन्या का पिता अपनी औकात से ज्यादा ही देता है, मांगोगे तो भी उतना ही दे पायेगा, नहीं मांगोगे तो भी उतना ही देगा। इसलिये स्पष्ट मना करना चाहिये कि धन या सामान-किसी भी रूप में दहेज नहीं लेंगे। बारात में चलने के लिए सब ने समझाया, आपकी इकलौती सन्तान का विवाह है- तो बोले-मेरा सार्वजनिक जीवन रहा है, मैं अनेकों बारातों में गया हूँ, यदि उन्हें आमन्त्रित नहीं करुँ, तो उचित नहीं, यदि आमन्त्रित करुँ तो बारात बड़ी होगी, जो कि मुझे स्वीकार्य नहीं, क्योंकि ये मेरे सिद्धान्तों के विरुद्ध है। उनका यह नियम था कि जिस विवाह में शराब पी जावेगी तथा बाजा व नाच होगा, उस विवाह में नहीं जायेंगे। यदि जाने पर शराब या नृत्य का पता चलता तो उसी समय अपना थैला उठाकर चले आते थे।

स्व. महाशय फूल सिंह जी हमारे गाँव के सबसे पुराने आर्यसमाजी थे जो दैनिक यज्ञ करते थे। कई गाँवों के सरपंच थे, जमींदार थे। कोई अफसर आता था, तो उन्हीं की कोठी पर आता था। महाशय जी एवं पिताजी की घनिष्ट मित्रता थी। दोनों ने गाँव में आर्यसमाज की स्थापना की। आस-पास के ग्रामों में स्थापना हेतु प्रेरित किया। महाशय जी प्रधान थे, पिता जी मन्त्री थे, गाँव के सम्भ्रान्त लोग साथ थे। भजनोपदेशक एवं उपदेशक, संन्यासीगण आते रहते थे, हमारा घर भी उनकी चरण-रज से पवित्र हो जाता था व हमें उनके दर्शन का लाभ मिलता था। एक बार तो आर्यसमाज का उत्सव होली के अवसर पर रख लिया। तीन दिन धूमधाम से उत्सव हुआ। रंगो के बजाय लोग ज्ञान-गंगा में नहाये, शराब की बजाय सत्संग का अमृत चखा।

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल 'पहले वैदिक योग आश्रम शुक्रताल' था। इसकी स्थापना में पिता जी का पूर्ण योगदान रहा। शुक्रताल सनातनधर्मियों का गढ़ था। वहां मुश्किल से जमीन ली गयी तो भवन-निर्माण में अड़चनें खड़ी कर दी गयीं। आस-पास के गाँव के आर्यों ने आश्रम का पूरा सहयोग किया। आश्रम में खड़े रहकर पिता जी ने भी तन-मन-धन से सहयोग किया। यही नहीं, जब गुरुकुल का आरम्भ हुआ तो उन्होंने प्रथम बैच में ही मुझे गुरुकुल पढ़ने भेज दिया। आर्यसमाज के प्रति उनकी निष्ठा अचल थी।

स्व. चौधरी जगतसिंह जी बसेड़ा ग्राम के विख्यात जमींदार थे, उनके पास कई सौ बीघा जमीन थी। पक्के आर्यसमाजी थे। सादगी व तप की प्रतिमूर्ति थे। ऊंचा कटिवस्त्र व ऊँचा आधी बाँह का सादा कुर्ता पहनते थे।

वैदिक योग आश्रम शुक्रताल की स्थापना से पूर्व ही वे जाट धर्मशाला शुक्रताल में बड़े-बड़े यज्ञ कराया करते थे। चौधरी साहब अपनी टीम के साथ कई बार हमारे गाँव से होकर जाते। हमारी बैठक रास्ते पर थी, थोड़ा विश्राम कर लेते थे। यज्ञ के प्रति श्रद्धा एवं आर्यों की एकता के हिमायती पिताजी ने एक बार उनसे निवेदन किया कि गांव की पावर हाउस पर एक निश्चित तिथि को यज्ञ का आयोजन हो जावे तो आस-पास के सभी आर्यजन एकत्रित हो जावें और समाज का काम और आगे बढ़े। दोनों के निश्चय से यज्ञ प्रारम्भ हो गया। तब से आज तक पावर आउस पर प्रतिवर्ष शरद् पूर्णिमा पर यज्ञ का भव्य आयोजन हो रहा है।

पिताजी चार दर्जे तक उर्दू पढ़े थे। उर्दू में लिखते थे। ओ३म् तो काफी बाद तक भी उर्दू में लिखा करते थे। धुन के धनी ने हिन्दी पढ़ना-लिखना सीखा तथा १९६२ में तो उनकी भजनों की किताब भी हिन्दी में छप गयी थी। संस्कृत पढ़ना सीखा तथा महर्षि के ग्रन्थ एवं पुराने विद्वानों के ग्रन्थों का अन्त समय तक स्वाध्याय करते रहे। अन्त समय में यज्ञ पर पुस्तक लिखी। जिसे हम प्रकाशित नहीं करा पाये। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, गुरुकुल काँगड़ी, वानप्रस्थ आश्रम व मोहन आश्रम के वार्षिक उत्सव लगातार एक के बाद एक हुआ करते थे। पिताजी व अन्य आर्यसमाजी प्रतिवर्ष साइकिलों से हरिद्वार जाते तथा सारे उत्सव देखकर ही वापस लौटते थे। यह क्रम लम्बे समय तक चलता रहा । वे बहुश्रुत थे व सिद्धान्तों के प्रति दृढ़-प्रतिज्ञ भी, संभवत: यही कारण था कि मंच से यदि सिद्धान्त विरुद्ध बात बोली जाती तो वे कई बार तो उठकर विरोध कर देते थे।

गोभक्त इतने कि स्वयं गाय का दूध प्रयोग करते, दूसरों को प्रेरित करते। इसी प्रभाव से हमारे घर अभी तक भी गाय के दूध का ही उपयोग किया जाता है। वे गोरक्षा आन्दोलन में जेल भी गये थे। उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों को अपने जीवन में जिया तथा विपरीत परिस्थितियों में भी उनकी आस्था में लेश मात्र भी परिवर्तन नहीं हुआ। परमपिता परमात्मा उनके सद्गुणों, सद्विचारों का अनुसरण करने की शक्ति हमें प्रदान करें-यही प्रार्थना है।

ऋषि मेला २०१६ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला ४,५,६ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१६ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज-** ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य: - १. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। २. अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। ३. बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। ५. आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाईयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३३ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक ४, ५, ६ नवम्बर २०१६, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्ग दर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३३ वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- ३१ अक्टूबर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहूति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन ६ नवम्बर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यानन्द वेद वागीश होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। ४, ५, ६ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। ४ नवम्बर को परीक्षा एवं ५ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१६ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

नवम्बर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तद्नुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३३ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर, आचार्य विजयपालजी-झज्जर, स्वामी ऋतस्पति जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमारजी- कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बडौत, आचार्या सूर्या देवी जी- शिवगंज, डॉ. राजेन्द्रजी विद्यालंकार, डॉ. रामप्रकाश जी, सत्येन्द्रसिंह जी- मेरठ, डॉ. कृष्णपाल सिंह जी- जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा- जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी -इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री प्रकाश जी आर्य-महू, श्री कन्हैयालाल जी-गुड़गाँव, डॉ. रामचन्द्र जी- कुरुक्षेत्र, श्री तपेन्द्र कुमार जी-जयपुर, डॉ. जगदेव जी-रोहतक, श्री विरजानन्द जी दैवकरणि-झज्जर, डॉ. सत्यपालसिंह जी-संसद सदस्य, डॉ. मुमुक्षु जी-नोएडा, ठाकुर विक्रमसिंह जी-दिल्ली, श्री अशोक जी आर्य-नोएडा, श्री रामपाल जी शास्त्री-मन्त्री हरियाणा प्रतिनिधि सभा, श्री सत्यवीर जी शास्त्री-रोहतक, श्री शत्रुञ्जय जी रावत- हैदराबाद, माता अमृत जी-श्री रामपाल जी-हरि., दिल्ली, श्री बाबूराम महात्रे-हैदराबाद, श्री सुदर्शन जी-ओडिशा, स्वामी शारदानन्द जी- आबूरोड, डॉ. राजवीर-फरीदाबाद, श्री सत्यपाल जी पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह जी आदि

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	धर्मवीर	ओम मुनि
संरक्षक	प्रधान	मन्त्री

आत्मा का स्थान-३

- स्वामी आत्मानन्द

चरक सुश्रुत आदि आयुर्वेद के सिद्धान्त ग्रन्थों में आत्मा का तथा उस के निवास स्थान का वर्णन नहीं किया गया। उन्हें उस के वर्णन की आवश्यकता भी न थी, क्योंकि आत्मा की चिकित्सा उन के शास्त्रों का विषय नहीं। आत्मा की चिकित्सा तो अध्यात्म शास्त्रों का विषय है। इन शास्त्रकारों ने चेतना का वर्णन अवश्य किया है। क्योंकि चेतना की वृद्धि तथा रक्षा के उपाय बतलाना और उस के विकृत हो जाने पर उस से उत्पन्न हुए प्रमाद आदि रोगों की चिकित्सा करना उनके शास्त्रों का विषय है।

अपनी अभ्युगत इस चेतना की सत्ता वे सारे ही शरीर में मानते हैं। क्योंकि शरीर में जितने आभ्यन्तर अथवा बाह्य कार्य हो रहे हैं वे सब चेतना के प्रताप से ही हो रहे हैं ऐसा वे मानते हैं।

परन्तु हृदय का वर्णन करते समय इन आचार्यों ने भी लिखा है "**चेतना स्थानमुत्तमम्**" (यह चेतना का उत्तम स्थान है)। यद्यपि ये आचार्य सारे शरीर को ही चेतना का स्थान मानते हैं परन्तु फिर भी इन का हृदय को चेतना का मुख्य स्थान मानना एक विशेष लक्ष्य की ओर ध्यान को आकर्षित करता है। इस से यह ध्वनित होता है कि चेतना का प्रधान आधार आत्मा है, और मुख्य रूप से चेतना का स्थान वह ही होना चाहिये जहाँ आत्मा रहता हो। इसप्रकार इन ग्रन्थकारों ने हृदय को चेतना का मुख्य स्थान कह कर प्रकारान्तर से हृदय को आत्मा का स्थान मान लिया है।

आयुर्वेद के एक संहिताकार आचार्य भेल ने चेतना का मुख्य स्थान मस्तिष्क को माना है। उन का मन्तव्य है कि प्रमाद रोग मस्तिष्क का रोग है। इस रोग में चेतना ही दूषित होती है। यदि चेतना मुख्य रूप से मस्तिष्क में न रहती हो तो मस्तिष्क के तन्तुओं में होने वाला प्रमाद चेतना को दूषित कर मनुष्य को पागल नहीं बना सकता।

उन के इस मन्तव्य की और आचार्यों के साथ इस प्रकार सङ्गति लग सकती है कि चेतना के एक साधन बुद्धि का निवास स्थान हमारा मस्तिष्क है। बुद्धि के विकार का नाम ही प्रमाद रोग है। क्योंकि मनुष्य के सब ही निर्णयों में बुद्धि का प्रधान भाग रहता है। और पागल हो जाने पर उस का कोई निर्णय भी व्यवस्थित नहीं रहता। अत: सम्भव है उन्होंने चेतना के मुख्य साधन बुद्धि के मस्तिष्क में निवास को ही वहाँ चेतना का मुख्य निवास कहा है और साधारणतया वे भी हृदय को ही चेतना का मुख्य स्थान मानते हों।

हम पहिले लिख आये हैं कि उपनिषद्कार ऋषियों ने आत्मा का स्थान हृदय कहा है "वह हृदय हमारे शरीर में कहाँ है" इस विषय का स्पष्टीकरण हम आगे के प्रसङ्ग में उपनिषदों के आधार पर ही करेंगे उपनिषदों में हृदय शब्द बहुधा शरीर के किसी विशेष स्थान के अर्थ में ही आता है। परन्तु उपनिषदों में ही कतिपय स्थानों में यह शब्द, मन और चित्त के अर्थों में भी प्रयुक्त हुआ है।

उपनिषदों के उन प्रसङ्गों का हम पहिले उल्लेख करेंगे जहाँ यह शब्द मन के अर्थों में आया है।

यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामा येऽस्य हृदि श्रिता:।
अथ मर्त्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्म समश्नुते।।

कठ ६/१४

(जब ये कामनाएँ छूट जाती हैं जो इसके हृदय में वर्तमान हैं, उस समय मनुष्य अमर हो जाता है, और यहाँ ही ब्रह्मानन्द का उपयोग करने लग जाता है, जीवनमुक्त हो जाता है।)

यहाँ हृदय शब्द मन का वाचक है, आत्मा अथवा मन के आश्रय, किसी स्थान विशेष का वाचक नहीं क्योंकि कामनाओं का आश्रय मन है न कि कोई स्थान विशेष। इसी प्रकार

यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्येह ग्रन्थय:।
अथ मर्त्योऽमृतो भवत्येतावद्ध्यनुशासनम्।।

कठ. ६/१५

(जब वे सब गांठे खुल जाती हैं जो इस के हृदय में हैं, फिर मनुष्य अमर हो जाता है, यह इतना ही उपदेश है।)

यहाँ संस्कारों तथा अविद्या की गांठे मन के ही एक

भाग चित्त में हैं, शरीर के किसी स्थान विशेष मे नहीं अत: यहाँ हृदय शब्द चित्त का वाचक है। बृहदारण्यक के निम्न प्रसङ्ग से यह विषय और भी स्पष्ट हो जाता है।

काम: सङ्कल्पो विचिकित्सा श्रद्धाऽश्रद्धाधृतिरधृति र्ह्रीर्धी र्भीरित्ये तत्सर्व मन एव।

(कामनाएँ, सङ्कल्प, सँशय, श्रद्धा, अश्रद्धा, धैर्य, अधीरता, लज्जा, बुद्धि, भय यह सब मन ही है)

यहाँ कामनाएँ और सशंय आदि अविद्या की ग्रन्थियाँ सब मन के ही धर्म कहे हैं। किसी हृदय नामक स्थान विशेष को इन का आधार नहीं माना।

इसी प्रकार कोषकार अमरसिंह ने भी हृदय को मन का वाचक स्वीकार किया है।

''चित्तन्तु चेतो हृदयं स्वान्त हृन्मानसं मन:''

(चित्त, चेतस् हृदय, स्वान्त, हृत् मानस और मन ये सब एकार्थक हैं)

इन प्रसङ्गों से स्पष्ट है कि हृदय शब्द मन के अर्थों में भी आता है इस के अतिरिक्त उपनिषदों में हृदय शब्द शरीर के एक प्रदेश अर्थ में भी आता है। और वह प्रदेश ही आत्मा का निवास स्थान माना जाता है। हमारे शरीर में वे प्रदेश दो हैं । उन में से एक हमारी छाती के बाएं भागों में स्तन के नीचे है। और दूसरा शिर में ब्रह्मरन्ध्र में । इन दोनों हृदयों का परिचय हम पाठकों को उपनिषत्कार महर्षियों की सम्मतियों के आधार पर ही देंगे। पहिले हम छाती के वाम वाले हृदय का साधक प्रमाण उपस्थित करते हैं।

''अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशद्वायु: प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशदादित्यश्चक्षुर्भूत्वाऽक्षिणी प्राविद्दिश: श्रोतं भूत्वा कर्णौ प्राविशन्नोषधिवनस्पतयो लोमानि भूत्वा त्वचं प्राविशंश्चन्दमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशन्मृत्युरपानो भूत्वा नाभिं प्राविशदापो रेतो भूत्वा शिश्नं प्राविशन्''।

ऐतरेय १/२/४

(अग्नि वाणी बन कर मुख में प्रविष्ट हो गया। वायु प्राण बन नासिका में प्रविष्ट हो गया। आदित्य चक्षु बन कर नेत्रों में प्रविष्ट हो गया। दिशाएँ श्रोत्र बन कर कानों में प्रविष्ट हो गई। औषधि वनस्पतियाँ रोम बन कर त्वचा में प्रविष्ट हो गई। चन्द्रमा मन बन कर हृदय में प्रविष्ट हो गया। मृत्यु अपान बन कर नाभि में प्रविष्ट हो गया। जल वीर्य बन कर जननेन्द्रिय में प्रविष्ट हो गया)

यहाँ इस प्रसङ्ग में शरीर-रचना की प्रक्रिया चल रही है। शरीर में इन्द्रियों के प्रवेश तथा उन के उपादान कारणों का उल्लेख किया जा रहा। आरम्भ में वाणी का मुख में, प्राण का नासिका में, चक्षु का नेत्रों में श्रोत्र का कानों में रोम अथवा त्वच इन्द्रिय का त्वचा में प्रवेश दिखला कर फिर मन हृदय में प्रवेश दिखलाया गया है। और इस के अनन्तर फिर अपान का नाभि में और वीर्य का जननेन्द्रिय में प्रवेश कहा गया है। इस प्रकार यहाँ ऊपर मुख से लेकर नीचे के क्रमिक स्थानों मेंइन्द्रियों के प्रवेश का वर्णन है । इस प्रसङ्ग में अपान के नाभि में प्रवेश से प्रथम मन के हृदय में प्रवेश का उल्लेख है। हमारी नाभि से ऊपर के भाग में वह ही स्थान है जो हमारे स्तन के नीचे वाम भाग में है। इसलिये मन के प्रवेश के लिए यहाँ इसी शरीर के भाग को हृदय नाम से कहा गया है। अत: यह सिद्ध है कि मन का निवास इस हृदय में है। कभी इन्द्रियों का अधिष्ठाता यक्षमन इस हृदय में रहता है इस का विस्तार से वर्णन ''मनो विज्ञान तथा ।शव संङ्कल्प'' में पढ़िये।

हमारा हृदय हमारे शिर में है उस के लिये भी हम उपनिषद् से ही प्रमाण उद्धृत करते हैं।

क्रमश.....

आगामी ऋषि मेला

४, ५, ६ नवम्बर २०१६, शुक्र, शनि, रविवार

को ऋषि उद्यान में होगा

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद प्रवचन होता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी आर्य सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं तथा अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। अतिथि यज्ञ के होता के रूप में दान देने वाले यजमान यदि ऋषि उद्यान में उपस्थित होते हैं तो उनके जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगाँठ, सम्बन्धियों की पुण्य तिथि एवं अन्य अवसरों से सम्बन्धित विशेष मन्त्रों से आहुतियाँ भी दिलवायी जाती हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और प्रवचन होते हैं। शनिवार सायंकाल वानप्रस्थी साधक-साधिकाओं द्वारा प्रवचन होता है। प्रत्येक रविवार को प्रात:काल के प्रवचन में समसामयिक सामाजिक, राष्ट्रीय घटनाक्रमों पर व्याख्यान होता है। सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिनमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं। ऋषि उद्यान के प्रांगण में प्रतिदिन प्रात: और सायं आर्यवीर दल की शाखा योग्य शिक्षकों के द्वारा लगायी जाती है, जिसमें आसन, प्राणायाम, जूडो-कराटे, रस्सा, मलखम, जिमनास्टिक आदि विद्याओं को सिखाया जाता है।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में अथर्ववेद के प्रथम सूक्त के मंत्रों की चर्चा करते हुए **डॉ. धर्मवीर जी** ने कहा कि ज्ञान वाणी के माध्यम से प्रकाशित होता है। हमें अपने को ज्ञान के अनुकूल बनाना चाहिये। ज्ञानियों से हमारा सम्बन्ध इतना सहज होना चाहिये कि जब हम उन्हें बुलायें तो वे आ सकें और वे भी हमें प्रेम से बुलायें। यह बात कहने में बहुत साधारण लगती है, लेकिन ऋषियों की दृष्टि में बहुत महत्त्वपूर्ण है। जिस बात को ऋषि कहते हैं, उसे हमें मान लेना चाहिये, क्योंकि उसका कोई विकल्प नहीं होता है। यदि विकल्प होता तो वे कहते ही नहीं। जो अन्तिम बात होती है, वह निर्णायक होती है। जहाँ विकल्प हो वहाँ परीक्षण होता रहता है। वेद के उपदेश का कोई विकल्प नही हैं। वह निर्णय है। ऋषियों ने जो बात वेद से ली, वह सैद्धांतिक है। हमें कोई तब याद रखता है, जब हम उसके प्रिय पात्र बन जायें। हम विद्वान् को चाहें तो वे भी हमारी उपेक्षा करने वाले न हों। वे हमारे आग्रह को स्वीकार करने वाले हों, उन्हें आने में प्रसन्नता हो। हम उन्हें याद करें, वे भी हमें याद करें। विद्वानों से सम्बन्ध होना सफलता और सुख का कारण है। ईर्ष्यालु और कुटिल मनुष्यों को ज्ञान नहीं देना चाहिये। जो आलसी और प्रमादी हो, उसे भी नहीं पढ़ाना चाहिये। जो विद्या का उपयोग नहीं करते या विद्या का दुरुपयोग करते हैं, उन्हें भी नहीं पढ़ाना चाहिये। जो कमजोर हों और पढ़ने के इच्छुक हों तो उन्हें पढ़ा देना चाहिये। विद्यार्थियों के घर पर पैसे लेकर पढ़ाना उचित नहीं है, क्योंकि उसमें ज्ञान का और ज्ञानी का सम्मान नहीं होता है। योग्य व्यक्ति को विद्या के अधिकार से वंचित नहीं करना चाहिये। आचार्य जिज्ञासुओं को जैसा स्वयं जानता है, वैसा ही पूर्ण रूप से पढ़ावे, कुछ बचाकर न रखे। जो ज्ञानी है वह ज्ञान से द्वेष नहीं करता है। जो अज्ञानी है वह ज्ञान और ज्ञानी दोनों से ही द्वेष करता है। ज्ञान में कोई विरोध नहीं है। अलग-अलग समय और स्थान में अलग-अलग ज्ञान का महत्त्व होता है। मनुष्य के पास सीमित साधन हैं, इसलिये वह सर्वज्ञ नहीं हो सकता। एक ही व्यक्ति को सभी विषयों का ज्ञान नहीं हो सकता। ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। छोटी आयु के विद्यार्थियों को शास्त्र-ज्ञान से पहले आचरण का ज्ञान देना चाहिये। सबसे पहले सभा में बैठना और बोलना आदि सिखाना चाहिये। आचार्य सदाचार की शिक्षा करता है और उसे सदाचार ग्रहण कराता है। उसके बाद संसार की वस्तुओं और व्यक्तियों से परिचय कराना चाहिये। बुद्धि को इस योग्य बना देना

कि स्वयं उसका विवेक कर सके। जिसको नहीं पढ़ा हो, उसके विषय में समाज के प्रतिष्ठित लोग जिस बात को कहें, उसे मान लेना चाहिये। ज्ञान के प्रति जीवन भर अनुराग होना चाहिये। सीखने के लिये सदा उत्सुक होना चाहिये। आयु, धन, बल, विद्या आदि में विद्या को सर्वोच्च स्थान प्राप्त होता है। वेद को जितनी भी बार पढ़ें, उतनी ही बार उसमें नयापन बना रहता है। वह कभी पुराना नहीं होता। किसी भी परिस्थिति में हमें ज्ञान और ज्ञानी से विरोध नहीं करना चाहिये।

रविवारीय प्रातःकालीन व्याख्यान के क्रम में आपने बताया कि आर्यसमाज का प्रचार वर्तमान में बहुत कम हो गया है, इसलिये अनेक प्रकार के अवैदिक मत बढ़ रहे हैं। ईसाई मिशनरियाँ, गरीब-दलितों और रोगियों को ईसाई बनाने के लिये उन्हें धन आदि की सहायता करती हैं, रोगियों का इलाज करती हैं, अंधविश्वास फैलाती हैं। गाँवों और नगरों में चर्च का जाल फैला रहे हैं। इन ईसाई मिशनरियों ने इस देश में बहुत-सा भू-भाग ले रखा है। वे सेवा और सहायता करने के बहाने लोगों को ईसाई बना रहे हैं। इसमें मूल कारण हमारे देश की जन्मना जाति-प्रथा है। विदेशी ईसाई और मुस्लिम संगठन हमारे देश में धर्मान्तरण के लिये बहुत धन भेजते रहते हैं। जब से इस देश में अंग्रेजों का शासन हुआ, तब से ईसाई मिशनरियाँ धर्मान्तरण में लगी हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने धर्मान्तरण के कारण होने वाली हानि से देश को बचाने के लिये सबसे पहले शुद्धि-कार्य किया। स्वामी दयानन्द जी के देहान्त के पश्चात् आर्यसमाज ने शुद्धि-कार्य को आगे बढ़ाया, किन्तु रोटी और बेटी का सम्बन्ध नहीं होने के कारण शुद्धि का पर्याप्त लाभ नहीं हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस समस्या को समझा और शुद्धि-सभा की स्थापना की। ईसाई, मुसलमान बन चुके कई हजार लोगों को वापस वैदिक धर्म में दीक्षित किया। हमें उन धर्मान्तरित लोगों से सम्पर्क करके उन्हें वेद के श्रेष्ठ विचारों से जोड़ना होगा। मिशनरियों के प्रतिकार का उपाय करना होगा। व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर धर्मान्तरण को रोकने का प्रयास करना चाहिये। इस समस्या को दूर करने का मुख्य साधन वेद के विचारों को उन लोगों तक पहुँचाना है जो हमसे दूर हैं।

प्रातःकालीन प्रवचन के क्रम में ऋग्वेद के चौथे काण्ड के अठारहवें सूक्त के मन्त्रों के महर्षि दयानन्द कृत पदार्थ और भावार्थ पर चर्चा करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि इन मन्त्रों में परमात्मा, राजा और सब मनुष्यों को ऐश्वर्यशाली बनने का उपदेश किया गया है। ऐश्वर्य अनेक प्रकार के हो सकते हैं जैसे-धन, बल, ज्ञान, बुद्धि, सद्गुण, चरित्र, योग्यता, प्रतिष्ठा, कला, कौशल आदि। अलग-अलग मनुष्यों का ऐश्वर्य गुणों और प्रकार की दृष्टि से कम-अधिक होता है। उसी से उनमें परस्पर तुलना होती है। जो अधिक ऐश्वर्य वाला हो, वह कम ऐश्वर्य वालों की उन्नति का कारण और प्रेरक होता है। ऐश्वर्य प्राप्ति का इच्छुक राजा अपनी प्रजा को बुरे कर्म करने से रोकता है। निरन्तर श्रेष्ठ कर्म करने के लिये प्रेरित करता है। प्रारम्भ किये गये कार्यों को अधूरा छोड़ने के लिये मना करता है। अत्यन्त श्रम से प्राप्त होने वाले विद्या, बल आदि की रक्षा और वृद्धि के लिये प्रजा को प्रेरित करता है। जो शत्रु युद्ध के लिये इच्छा करे, उन शत्रुओं से युद्ध करने के लिए योग्य सलाहकारों से सलाह करता है। उत्तम नेतृत्व, सहनशीलता, पुरुषार्थ आदि से राजा श्रेष्ठ और ऐश्वर्यशाली बनता है। वेद में प्राकृतिक पदार्थों-जैसे सूर्य, मेघ, नदी, ऊषाकाल, सृष्टिक्रम, पशु-पक्षियों के व्यवहार आदि की उपमा देकर अलंकारिक भाषा में उपदेश दिया गया है। जिज्ञासु मनुष्यों के लिये बताया गया है कि ऐश्वर्य-प्राप्ति के लिये हमारी सेना क्रोधपूर्वक उच्च स्वर करते हुए शत्रुओं के सामने वैसे ही जावे, जैसे नदी तटों को तोड़ती हुई आगे बढ़ती है। देश की सुरक्षा और शान्ति के लिये सैन्यबल आवश्यक है। सुरक्षा और शान्ति से ऐश्वर्य प्राप्त हो सकता है। प्रतिदिन ऊषाकाल हमें श्रेष्ठ ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिये प्रेरित करता है। राजा, विद्वान्, राजसभा और सेना अन्न आदि पदार्थों के अति संग्रह करने वालों को दण्ड देकर उचित वितरण की व्यवस्था करे, जिससे प्रजा को किसी पदार्थ के अभाव से कष्ट न होवे। प्रजा की उन्नति में आने वाली बाधाओं को दूर करे। शासन-व्यवस्था में अवरोध उत्पन्न करने वाले विद्रोहियों को नियन्त्रित करे। आगे आपने बताया कि जो दुष्ट स्त्री-पुरुष पितरों का नाश करके माताओं

को विधवा करे, उनका विश्वास कभी न करे। प्रजा, राजा से अपेक्षा करती है कि राज्य में जो भी व्यभिचार आदि दुष्कर्म करने वाले स्त्री-पुरुष हों, उनको तीव्र दण्ड देकर नष्ट करे। अन्य कोई मनुष्य पशु के समान आचरण करे, दूसरों के धन आदि पदार्थों को चुरावे, नाश करे तो वह भी राजा के द्वारा दण्डनीय होवे। बुरे काम करने वाले विद्वानों से ज्ञान प्राप्त करके हम सुखी नहीं हो सकते।

प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि आदि-सृष्टि में हजारों मनुष्य तिब्बत में युवावस्था में उत्पन्न हुए। उनमें से श्रेष्ठ स्वभाव वाले लोग निवास के लिये अत्यन्त उपयोगी जानकर इस भूभाग में बस गये, जिसे हम आर्यावर्त्त या भारत कहते हैं। जो विदेशी लेखक और हमारे देश के अज्ञानी लोग कहते हैं कि आर्य बाहर से आये, उसका कोई प्रमाण वे आज तक नहीं दे सके। 'भा दीप्तौ' धातु से भारत शब्द बनता है, अर्थात् जिस देश के लोग ज्ञान में रत रहते हैं, ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं ऐसे लोगों का देश भारत है। अपने देश की प्रशंसा करते हुए स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि "जो पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्य्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है।" हमारे देश का आर्यावर्त्त और भारत नाम उचित है जो हमारे पूर्वज ऋषियों ने सृष्टिकाल के आदि में रख दिया। लगभग एक हजार वर्ष पहले विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारियों ने इस देश का नाम हिन्दुस्तान रखा। स्वामी दयानन्द जी ने पूना प्रवचन में 'हिन्दुस्तान' शब्द का अर्थ काला, काफिर, चोर लोगों की जगह अथवा देश बताया, क्योंकि 'हिन्दू' विदेशी शब्द है। उन विदेशियों के शब्दकोश में इसका यही अर्थ है। यह हिन्दू शब्द गाली है। राष्ट्र की उन्नति के लिये जैसा श्रेष्ठ चिन्तन महर्षि दयानन्द जी ने किया, वैसा उनके समकालीन समाज सुधारक और नेता नहीं कर सके। इसी प्रकार 'इण्डिया' शब्द भी संस्कृत अथवा हमारे देश के किसी भाषा का शब्द नहीं है। इस देश का नाम इण्डिया अंग्रेजों ने रखा। इण्डिया का अर्थ असभ्य जंगली लोगों का देश है। जवाहर लाल नेहरू और उनके जैसे अंग्रेजी मानसिकता वाले लोग इन नामों को चलाते रहना चाहते हैं। ये हिन्दुस्तान और इण्डिया शब्द हमारे देशवासियों को अपमानित करने के लिये रखे गये नाम हैं। जिन मुसलमानों और अंग्रेजों ने हमारे देश का ये नाम रखा, वे आक्रमणकारी और लुटेरे थे। उनके दिये नाम पर गर्व करना पूर्णत: अनुचित है। अज्ञानता और हठ के कारण आर.एस.एस. वाले नारा लगाते रहते हैं- गर्व से कहो-हम हिन्दू हैं। हिन्दुत्व के नाम पर मूर्तिपूजा और पौराणिक गपोड़ों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे देश की बहुत हानि हो रही है।

सायंकालीन प्रवचन में **स्वामी मुक्तानन्द जी** ने दर्शनों पर चर्चा करते हुए कहा कि सभी दर्शनशास्त्रों का मूल वेद है। छहों दर्शनों की विद्या ऋषियों को सृष्टि के आदि काल से ही प्राप्त रही है। वे पुस्तक के रूप में बाद में संकलित किये गये। सांख्य दर्शन के अनुसार संसार में २५ पदार्थ हैं, जिससे यह दृश्यमान् जगत् बना है। सत्, रज और तम की साम्य अवस्था का नाम प्रकृति है। ईश्वर सृष्टि के आदि में संकल्प करके मूल पदार्थ सत्, रज, तम से महत्तत्व बुद्धि का निर्माण करता है। सभी प्राणियों के पास बुद्धि होती है, परन्तु मनुष्य के पास बुद्धि से काम लेने का अवसर अन्य प्राणियों से अधिक होता है। महत्तत्व से अहंकार का निर्माण होता है। अहंकार से अपने अस्तित्व का बोध होता है। ईश्वर अहंकार से पाँच तन्मात्रा, पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय तथा मन को बनाता है। पाँच तन्मात्राओं या सूक्ष्मभूतों से पाँच स्थूलभूतों को बनाता है। स्थूलभूतों के बाद कोई नया पदार्थ (तत्त्वान्तर) नहीं बनता है। रंग, रूप, आकार बदलते रहते हैं। मूल प्रकृति और पुरुष (ईश्वर और जीवात्मा) को छोड़कर अन्य सब अनित्य हैं। वैशेषिक, न्याय, योग दर्शन में भी प्रकृति और पुरुष को नित्य माना गया है। पाँच स्थूलभूतों के अलग-अलग मात्रा में मिलने से सब दृश्यमान पदार्थ बनते हैं। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, तारे, ग्रह, लोक-लोकान्तर, समुद्र, पहाड़ आदि ये सब पाँच महाभूतों के धर्म, लक्षण और अवस्था परिणाम हैं। सृष्टि के आरम्भ से अन्त तक ये सब बने रहते हैं। बीज से वृक्ष, वृक्ष से बीज क्रमश: बनते रहते हैं। इस संसार में भोग करने के लिये जीवात्मा के पास अन्त:करण के रूप में अहंकार, बुद्धि, मन और चित्त होता है। अहंकार दो प्रकार का होता है-शुद्ध और अशुद्ध। शुद्ध अहंकार से जीवात्मा स्वयं के स्वरूप को जानता है।

अपने सामर्थ्य से अधिक मानना अशुद्ध अहंकार या मिथ्या अभिमान कहलाता है। निश्चय करने के लिये बुद्धि होती है। बुद्धि द्रव्य है, वस्तु है, एक पात्र के समान है जिसमें ज्ञान को भरकर रखते हैं। धर्म-अधर्म, ज्ञान-अज्ञान, वैराग्य-अवैराग्य, ऐश्वर्य-अनैश्वर्य -ये आठ प्रकार की बुद्धि होती है। संकल्प-विकल्प, विचार करना आदि मन के कार्य हैं। मन के पश्चात् पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ-कान, आँख, जीभ, नाक, त्वचा क्रमशः शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श का ज्ञान कराती हैं। पाँच कर्मेन्द्रियाँ अपने-अपने कार्य करती हैं। स्थूल शरीर इसी जन्म में काम आता है और मृत्यु के पश्चात् छूट जाता है। पुनर्जन्म में सूक्ष्म शरीर दूसरे स्थूल शरीर को प्राप्त करता है। सृष्टि के आदि से लेकर प्रलय तक सूक्ष्म शरीर बना रहता है।

सायंकालीन प्रवचन में **प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी** ने कहा कि वेद के अनेक मन्त्रों में जीवन निर्माण के लिये मर्यादा, सुख-शान्ति तथा सफलता आदि प्राप्त करने के लिये उपदेश हैं, संदेश हैं, आदर्श हैं। केवल वेदपाठ न करें, किन्तु किसी एक मन्त्र पर ही यदि हम चिन्तन, मनन, आचरण करें तो हमारे जीवन में परिवर्तन आयेगा, एक मन्त्र से भी हमारे जीवन में क्रान्ति आ सकती है। संसार में मनुष्य का सबसे अधिक कल्याण कोई कर सकता है तो वह मन है और यदि मनुष्य को बहुत बुरे काम करवाने वाला कोई है तो वह मन ही है। हमारा मन कल्याणकारी विचारों वाला हो। मन को वश में करके संसार में बड़े से बड़ा काम किया जा सकता है, यदि वश में न करें तो वह बुरे से बुरा काम करवाता है। मन को योगाभ्यास, वैराग्य आदि से वश में करके जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है। शिक्षा पूरी होने के बाद भी स्वाध्याय करना चाहिये, सत्य बोलना चाहिये और धर्म पर चलना चाहिये। विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त करके उनके ज्ञान और अनुभव का लाभ लेना चाहिये। केवल सद्गुणों को धारण करके कम पढ़ा-लिखा छोटे से छोटा व्यक्ति भी स्मरणीय कार्य कर सकता है। हिन्दुओं के समान अनेक मूर्तियों और जड़ पदार्थों की उपासना न करके केवल एक निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सृष्टिकर्ता, सब लोकों के स्वामी, प्रकाशस्वरूप परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिये। ईश्वर का मुख्य और निज नाम एक ओ३म् ही है, क्योंकि वह ईश्वर एक ही है। ओ३म् शब्द का रूप किसी काल, वचन, विभक्ति के अनुसार बदलता नहीं है। ईश्वर के असंख्य नाम, गुण, कर्म, स्वभाव का विचार करते-करते मन थक जाता है, उसके आनन्द में मग्न हो जाता है। संसार के सब देशों में मनुष्य, पशु, पक्षियों आदि के शरीर तथा पेड़-पौधों की एक समान रचना देखकर पता चलता है कि ईश्वर सर्वव्यापक है और उसका नियम सब जगह एक जैसा ही है। हमें अपने जीवन का लक्ष्य निश्चित करना चाहिये। जिस शब्द का कोई अर्थ नहीं वह निरर्थक है और जिस जीवन का कोई लक्ष्य नहीं वह भी निरर्थक है। प्रतिदिन प्रातःकाल, सायंकाल विचार करना चाहिये कि क्या हम अपने लक्ष्य के अनुकूल कार्य कर रहे हैं? और यदि कर रहे हैं तो कितने सफल हुए हैं? जो कुछ भी मनुष्य बनाता है, वह सब परमात्मा के कार्यों की ही नकल है। जो उस परमात्मा की रचना और उसके कर्मों को देखेगा, विचार करेगा तो उसकी उपासना उसी में हो जायेगी। जितना अधिक उस पर विचार करेगा, उतना ही ईश्वर की महानता को अधिक समझेगा, उसकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी, उसको उतना ही अधिक आनन्द प्राप्त होगा। रात्रि में सोने से पहले महत्त्वपूर्ण बातों को लिख लेना चाहिये। व्याख्यानों में बिना प्रमाण के कोई बात नहीं कहना चाहिये। काशी, नादिया और दक्षिण भारत के पण्डित तथा शंकराचार्य किसी एक ही विषय को पढ़ा सकते थे, लेकिन महर्षि दयानन्द जी के बाद आर्यसमाज के तीन संन्यासी ऐसे हुए हैं जो व्याकरण, छन्दशास्त्र, छः दर्शन, वेद आदि सभी शास्त्रों को पढ़ाने की योग्यता रखते थे। वे थे-स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी स्वतंत्रानन्द जी और स्वामी आत्मानन्द जी। वेद, दर्शन, उपनिषद् तथा ऋषियों के वाक्य कंठस्थ होने चाहिये। गूढ़ बातों को सरल भाषा में समझाने की योग्यता होनी चाहिये। प्रश्नोत्तर और शंका-समाधान करना चाहिये। केवल अपने कष्टों पर ध्यान नहीं देना चाहिये। देश, धर्म, समाज और जाति की रक्षा के लिये कष्ट सहन करते हुए भी कार्य करते करना चाहिये। संसार में जो दुःख, रोगादि हैं उनका कारण शारीरिक मानसिक पाप व अधर्म है। सुख का मूल कारण सद्विचार और धर्म है।

ब्र. सत्यव्रत जी ने स्वरचित गीत 'वीर शहीदों की शोणित से रंजित अमर कहानी है' सुनाया। **ब्र. प्रभाकर जी** ने 'भूले ना भूले ना प्रभु याद रहे' भजन सुनाया। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगे हुए महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, अजमेर के स्नातक आचार्य रामदयाल जी ऋषि उद्यान पधारे। आपने अपने सुमधुर कण्ठ से भजन प्रस्तुत करके सबको आनन्दित कर दिया।

शनिवार सायंकालीन सत्संग में **श्री गिरधारी लाल जी** ने कहा कि सब प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है। मनुष्यों को सुखपूर्वक जीवन बिताने के लिये अनेक वस्तुएँ चाहिये, जैसे -स्वास्थ्य, धन, ज्ञान, मकान, परिवार, व्यवसाय आदि। इन सबमें अधिक महत्त्वपूर्ण आवश्यक पदार्थ बुद्धि है। बुद्धि न हो तो अन्य सब पदार्थ व्यर्थ हो जाते हैं। बुद्धि की श्रेष्ठता के लिये सदाचार, ईश्वर भक्ति और वेदज्ञान की आवश्यकता होती है।

रविवारीय सायंकालीन प्रवचन के क्रम में **ब्र. पुरुषोत्तम जी** ने कहा कि ऋषि परम्परा में दीक्षित गुरुकुल के ब्रह्मचारी ही देश और समाज का कल्याण कर सकते हैं। स्कूल की पढ़ाई से कोई व्यक्ति सीमित मात्रा में ही परोपकार कर सकता है। गुरुकुल का स्नातक वेद विद्या पढ़कर संसार को श्रेष्ठ शिक्षा दे सकता है, सन्मार्ग पर ले जा सकता है।

*** डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रमः- (क) २७ सितम्बर से ०३ अक्टूबर २०१६: आर्यसमाज पिलखुआ।

(ख) १२-१९ अक्टूबर २०१६: योग शिविर ऋषि उद्यान, अजमेर।

(ग) १४-१६ अक्टूबर २०१६: आर्यसमाज केसरगंज, अजमेर।

आगामी कार्यक्रमः- (क) २२-२३ अक्टूबर २०१६: गुरुकुल लाढ़ौत, हरियाणा।

(ख) २३ अक्टूबर २०१६: सामभेड़ा, जिला-महेन्द्रगढ़।

(ग) ०७-१३ नवम्बर २०१६: आर्यसमाज बड़ा बाजार, सोनीपत का शताब्दी समारोह।

(घ) १४-२० नवम्बर २०१६: आर्यसमाज कृष्णा नगर, दिल्ली।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रमः- (क) ०२ अक्टूबर २०१६: दयानन्द मठ रोहतक के मासिक सत्संग में मुख्य वक्ता।

(ख) ०३-०९ अक्टूबर २०१६: आर्यसमाज सेक्टर-१५ के वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता।

(ग) १०-११ अक्टूबर २०१६: आर्यसमाज लोहाना, रेवाड़ी के वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता।

(घ) १२-१८ अक्टूबर २०१६: योगशिविर ऋषि उद्यान, अजमेर।

आगामी कार्यक्रमः-

(क) १९-२३ अक्टूबर २०१६: आर्यसमाज मॉडल टाऊन, हिसार का वार्षिकोत्सव।

(ख) २४-२७ अक्टूबर २०१६: वेद मन्दिर चाँदपुरा, बिजनौर।

*** आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रमः-

(क) १८-१९ सितम्बर २०१६: आर्यसमाज कुकावी, सहारनपुर का वार्षिकोत्सव।

(ख) २५-२७ सितम्बर २०१६: रिंगस, राजस्थान।

आगामी कार्यक्रमः-(क) २२-२३ अक्टूबर २०१६: ईशापुर गाँव, दिल्ली।

(ख) २५-२९ अक्टूबर २०१६: योग साधना शिविर सिंहपुरा, रोहतक, हरियाणा।

(ग) ११, १२, १३ नवम्बर २०१६: आर्यसमाज आर. के. पुरम्, नई दिल्ली।

मुमुक्षु मुनि जी का सम्पन्न कार्यक्रमः-

०६ सित. १६: श्रीमती निर्मला गुप्ता के पुत्र के जन्म-दिवस पर यज्ञ-प्रवचन, यू.टी.आई. कालोनी, अजय नगर, अजमेर।

२३ सित. १६: श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल के बेटे के जन्म-दिवस पर यज्ञ-प्रवचन, ओंकार नगर, अजमेर।

२४ सित. १६: डॉ. श्री सुनील के. वैदिक, प्रगति नगर अजमेर के वैवाहिक वर्षगाँठ पर यज्ञ-प्रवचन।

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३० सितम्बर २०१६ तक)

१. श्रीमती मधुर भाषिनी कपूर, जयपुर, राज. २. श्री ईश्वर दयाल माथुर, जयपुर, राज. ३. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली ४. श्रीमती राजमोहनी सोंधी, पंजाब ५. श्री ओमप्रकाश गोयल, अजमेर ६. श्री वासुदेव आर्य, अजमेर ७. श्री कोटेश्वर आर्य, अजमेर ८. श्री एस.के. सिंघल, चण्डीगढ़, पंजाब ९. श्रीमती उमा सोनी, अजमेर।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३० सितम्बर २०१६ तक)

१. वेद कुमारी, चण्डीगढ़, पंजाब २. समज्ञया पाण्डे, अजमेर ३. श्री आर.के. अरोड़ा, दिल्ली ४. आर्य ध्रुव उपाध्याय, अजमेर ५. कै. चन्द्रप्रकाश त्यागी व श्रीमती कमलेश त्यागी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड़ ६. श्री रामलाल अरोड़ा, अजमेर ७. श्री माणकचन्द रांका, अजमेर ८. श्री महेन्द्र प्रसाद शर्मा, अजमेर ९. श्री जयदेव अवस्थी, जोधपुर, राज. १०. श्री दमोदर अजमेरा, चित्तौड़गढ़, राज. ११. श्री सत्यनारायण, चित्तौड़गढ़, राज. १२. डॉ. सत्यवीर सिंह, पानीपत, हरियाणा १३. श्री सत्यनारायण रेड्डी, हैदराबाद, तेलंगाना १४. श्रीमती उमा सोनी, अजमेर १५. श्रीमती बीना जोशी, धारांगधरा, गुजरात।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

स्वामी विद्यानन्द जी ट्रस्ट द्वारा परोपकारिणी सभा को प्रदत्त राशि का विभिन्न गुरुकुलों को वितरण किया गया

(१ अगस्त से १७ सितम्बर २०१६ तक)

१. श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गड़पुरी, जि. पलवल, हरि. २. आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय पीठ, बहादुरगढ़, जि. हापुड़, उ.प्र. ३. आचार्या कन्या गुरुकुल भुसावर (आर्यसमाज), जि. भरतपुर, राज. ४. आचार्या आर्ष कन्या गुरुकुल दादिया, जि. अलवर, राज. ५. मन्त्री श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, अनारकली मन्दिर मार्ग, दिल्ली ६. आचार्य महर्ष्णि दयानन्द आर्ष गुरुकुल व गौशाला भादास, जि. महू (मेवात) हरि. ७. आचार्य श्री सर्वानन्द संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम, पो. व डा. साधु आश्रम अलीगढ़, उ.प्र. ८. आचार्या आर्य कन्या गुरुकुल ट्रस्ट हसनपुर, जि. पलवल, हरि.।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

– महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

कुर्बानी कुरान के विरुद्ध?

(इस्लाम के मतावलम्बी कुर्बानी करने के लिए प्राय: बड़े आग्रही एवं उत्साही बने रहते हैं। इसके लिए उनका दावा रहता है कि पशु की कुर्बानी करना उनका धार्मिक कर्त्तव्य है और इसके लिए उनकी धर्मपुस्तक कुरान शरीफ में आदेश है। हम श्री एस.पी. शुक्ला, विद्वान् मुंसिफ मजिस्ट्रेट लखनऊ द्वारा दिया गया एक फैसला पाठकों के लाभार्थ यहाँ दे रहे हैं, जिसमें यह कहा गया है कि "गाय, बैल, भैंस आदि जानवरों की कुर्बानी धार्मिक दृष्टि से अनिवार्य नहीं।" इस पूरे वाद का विवरण पुस्तिका के रूप में वर्ष १९८३ में नगर आर्य समाज, गंगा प्रसाद रोड (रकाबगंज) लखनऊ द्वारा प्रकाशित किया गया था। विद्वान् मुंसिफ मजिस्ट्रेट द्वारा घोषित निर्णय सार्वजनिक महत्त्व का है-एक तर्कपूर्ण मीमांसा, एक विधि विशेषज्ञ द्वारा की गयी विवेचना से सभी को अवगत होना चाहिए-एतदर्थ इस निर्णय का ज्यों का त्यों प्रकाशन बिना किसी टिप्पणी के आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है। -**सम्पादक**)

पिछले अंक का शेष भाग.....

जहाँ तक भारतीय संविधान के अनुच्छेद २५-२६ का प्रश्न है उनमें प्रारम्भ में ही "Subject to public order morality & health" शब्द जुड़े हुए हैं, जो इस बात का प्रतीक हैं कि धार्मिक कृत्य कोई भी पब्लिक आर्डर, नैतिकता एवं स्वास्थ्य के विपरीत नहीं किया जायेगा। उदाहरण के लिए हिन्दू धर्म भी सती प्रथा अथवा आत्मदाह किसी पाप के प्रायश्चित करने के प्रकार बताये गये हैं, परन्तु चूँकि वह उपरोक्त तीन शब्दों के प्रतिकूल होने के कारण न्यायालय उन्हें इजाजत नहीं दे सकती।

इस बात को भी स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं है कि दीवानी अधिकार (सिविल राइट) यदि मौलिक अधिकारों के समक्ष चुनौती उत्पन्न करते हैं तो मौलिक अधिकारों को वरीयता दी जायेगी और दीवानी अधिकार उस हद तक संशोधित एवं निरस्त समझे जायेंगे। यदि वादीगण को प्रतिवादीगण के विरुद्ध केवल दीवानी अधिकार ही प्रदत्त हैं, जबकि भैसें की कु र्बानी करना प्रतिवादीगण का मौलिक अधिकार है, तो निश्चय ही वह प्रतिवादीगण का मौलिक अधिकार माना जायेगा और वादीगण के दीवानी अधिकार निरस्त समझे जायेंगे। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने दुर्गा कमेटी अजमेर आदि बनाम सैयद हुसैन अली आदि ए.आइ.आर. १९६४ पेज १४०२ के अनुच्छेद ३३ में यह स्पष्ट किया है कि बड़ी सफलतापूर्वक यह ध्यान देने योग्य है कि प्रचलित धर्म की रीति धर्म का आवश्यक एवं अभिन्न अंग है अथवा वह चली रीति धर्म का अभिन्न एवं आवश्यक अंग नहीं है और इस तथ्य को भारतीय संविधान के अनुच्छेद २६ के आवरण में दिखाना होगा। उसी प्रकार प्रचलित धर्म रीति केवल अन्धविश्वास है अथवा अनावश्यक एवं स्वयं में धर्म का अंग न हो, जब तक धार्मिक प्रचलित रीति आवश्यक एवं अभिन्न धर्म का अंग न हो। अनुच्छेद २६ के तहत सुरक्षा प्रदान नहीं की जा सकती तो उसका बड़ी सावधानीपूर्वक निरीक्षण करना होगा। दूसरे शब्दों में संवैधानिक सुरक्षा उन्हीं धार्मिक रीतियों को देता है जो धर्म का आवश्यक एवं अभिन्न अंग हैं। पाक कुरान शरीफ की सन्दर्भित आयतों को देखकर एवं विद्वान् अधिवक्तागण के द्वारा प्रस्तुत किये गये तर्कों का सिंहावलोकन कर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि भैंस-भैंसे की कुर्बानी एक अन्ध विश्वास की देन है। पाक कुरान शरीफ अथवा इस्लाम का आदेश न होने के कारण इस्लाम धर्म का आवश्यक व अभिन्न अंग नहीं है। इस्लाम धर्म में बहुतेरे पैगम्बर, सिद्धहस्त फकीर एवं महान् मुसलमान आत्माओं को जन्म दिया है, जिन्होंने कोई कुर्बानी नहीं दी। इसका यह मतलब नहीं हुआ कि कुर्बानी के बिना बहिस्त प्राप्त नहीं हो सकता। वर्तमान वाद में प्रतिवादीगण भैंसे की कुर्बानी को इस्लाम का आवश्यक अंग सिद्ध करने में सर्वथा असमर्थ रहे हैं।

यहाँ पर मैं यह भी कहना उचित समझता हूँ कि विभिन्न धर्मों के लोग महिलामऊ गाँव में रहते हैं, जहाँ अब तक भैंस-भैंसे की कुर्बानी नहीं हुई और यदि वे इसे बुरा मानते हैं और अहिंसा में विश्वास करते हैं, तो उनकी धार्मिक भावनाओं को भैंसे की कुर्बानी की इजाजत देकर ठेस पहुँचाना कहाँ तक उचित होगा, जबकि वे इतने सहिष्णु हो चुके हैं कि बकरे, भेड़, भेड़ा की कुर्बानी करने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं है।

मेरे समक्ष यह तर्क दिया गया है कि एक बड़े जानवर में सात व्यक्ति शरीक हो सकते हैं, इसलिये भैंस-भैंसे की कुर्बानी एक गरीब व्यक्ति के लिये लाजमी है, जबकि वह व्यक्ति इतना गरीब है कि एक बकरी खरीद कर कुर्बानी नहीं दे सकता तो क्या वह पब्लिक आर्डर, नैतिकता की सुरक्षा, मलमूत्र, रक्त आदि विसर्जित करके ठीक से निर्वसन कर सकेंगे, इसमें सन्देह है और निश्चय ही गन्दगी को बढ़ावा मिलेगा। सरकार ने इसलिए बड़े जानवर को काटने के लिए बूचड़खानों का प्रबन्ध किया है।

यदि पाक कुरान शरीफ की गहराइयों में झाँका जाए और बारीकियों को परखा जाए तो व्यक्ति को काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह एवं अहं की कुर्बानी करनी चाहिये न कि बेचारे चौपायों की, जिन्हें चाँदी के कुछ सिक्कों में खरीदा जा सकता है। मनुष्य को इन्द्रियजित, मनोवृत्तिजित् होना चाहिये। किसी भी धर्म के आधारभूत सिद्धान्त हिंसा में विश्वास नहीं करते और मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि पाक कुरान शरीफ में भैंस-भैंसे की कुर्बानी का सन्दर्भ कहीं पर नहीं आया है अन्यथा मेरे समक्ष इस प्रकरण एवं तथ्यों पर हुई गवाही में अवश्य आता। इस साक्षी को अपने उलेमाओं से भी मदद लेने का अवसर था, परन्तु फिर भी यह साक्षी मेरे समक्ष इस प्रकार का कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर सका, जिससे अनुमान लगाया जायेगा कि पाक कुरान शरीफ अथवा इस्लाम में कुर्बानी करना फर्ज नहीं है और कुर्बानी भैंस या भैंसे की नहीं हो सकती।

साक्षी सं. १ हाजी सैयद अली ने और साथ ही साक्षी सं. ५ मो. रफीकुद्दीन ने यह स्वीकार किया है कि कुर्बानी के अलावा भी अन्य तरीकों से भी बहिस्त प्राप्त हो सकती है, गरीब आदमी इबादत के द्वारा बहिस्त प्राप्त कर सकता है। यदि कुर्बानी द्वारा ही एक मात्र बहिस्त प्राप्त किया गया होता तो निश्चय ही इस्लाम धर्म के सभी राजा-महाराजाओं सेठ-साहूकारों ने बहिस्त प्राप्त कर लिया होता और गरीब फकीर उधर लालयित होकर देखते रहते, जबकि सत्यता इसके प्रतिकूल है।

इसके विपरीत वादीगण की ओर से श्रीराम आर्य को परीक्षित किया गया, जिन्होंने करीब ८० किताबें धार्मिक विचारों पर लिखी हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि पाक कुरान शरीफ से सम्बन्धित आठ-दस किताबें उन्होंने लिखी हैं। कुरान शरीफ की छानबीन, कुरान शरीफ का प्रकाश व पुनर्जन्म, कुरान शरीफ में बुद्धि विज्ञान आदि कई किताबें लिखीं। इस साक्षी ने अपने मुख्य कथन में स्पष्ट स्वीकार किया है कि केवल एक ही आदेश हज के समय ऊँट की कुर्बानी का है अन्य किसी जानवर की कुर्बानी का नहीं है। किसी दूसरे जानवर यानी भैंसे की कुर्बानी का आदेश पाक कुरान शरीफ में नहीं है। जो व्यक्ति भैंस-भैंसे को काटता है, उसकी कुर्बानी इस्लाम के खिलाफ है। इस साक्षी ने अपने मुख्य कथन में यह भी कहा कि उसने धार्मिक किताबें हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित की हैं। पृच्छा में इस साक्षी ने यह भी स्वीकार किया कि पाक कुरान शरीफ में कुर्बानी का जिक्र सूरे हज्ज में है, सूरे वक्र में नहीं। सूरे हज्ज में ही केवल कुर्बानी का आदेश है, अन्य कहीं नहीं। पारा बिना किताब देखे नहीं बता सकता। इस साक्षी ने यह भी स्पष्ट इन्कार किया कि उसने कुरान शरीफ अथवा मुस्लिम कल्चर का पूर्ण अध्ययन नहीं किया है। इस साक्षी ने स्पष्ट स्वीकार किया कि कुरान शरीफ अरबी में उसने नहीं पढ़ा है, परन्तु कुरान शरीफ उसने कई बार पढ़ा। उसका ट्रान्सलेशन अहमद वसीर, काबिल तवीर, काबिल मौलवी लखनऊ, शाह अब्दुल कादिर के तर्जुमें पढ़े हैं। इस साक्षी ने भी स्वीकार किया कि ये लोग आलिम हैं या नहीं, परन्तु इनका अनुवाद मान्य है। मैं इस स्वतन्त्र साक्षी के साक्ष्य को ग्राह्य करने का कोई औचित्य नहीं समझता, जबकि इस साक्षी की साक्ष्य का संपुष्टन सफाई साक्षी नं. ५ मो. रफीकुद्दीन ने भी किया है और कुरान शरीफ में कुर्बानी फर्ज है, नहीं ढूँढ सका और अन्त में उसने विवश होकर यह स्वीकार किया कि हिंसा करना कुरान शरीफ में पाप है और सभी वस्तुएँ अल्लाह की बनाई हुई हैं, किसी को चोट पहुँचाना पाप है। ऐसी दशा में नि:संकोच कहा जा सकता है कि जब प्रतिवादीगण भैंस-भैंसे की बलि इस्लाम में सिद्ध नहीं कर पाये हैं तो उन्हें अनुच्छेद २५ व २६ भारतीय संविधान का लाभ नहीं मिल सकता और वे किस हद तक प्रतिवाद पत्र की धारा १०में वर्णित आधार पर लाभ पा सकते हैं, उत्तर नकारात्मक होगा।

उपरोक्त व्याख्या के अनुसार विवाद्यक नं. २,३ व ५ वादीगण के अनुकूल एवं प्रतिवादी गण के प्रतिकूल निर्णीत

किये गये।

विवाद्यक सं. ७

इस विवाद्यक को सिद्ध करने का भार वादीगण पर है। इस सम्बन्ध में वादी साक्षी नं. २ महन्त विद्याधर दास ने अपने मुख्य कथन में अभिकथित किया कि कुर्बानी का प्रभाव जनता पर पड़ेगा। भैसों की कुर्बानी से हिन्दुओं में उत्तेजना फैलेगी, साम्प्रदायिकता बढ़ेगी। इस गाँव में कोई पशुवधशाला नहीं है और न ही पशुवधशाला का अलग स्थान है। इस गाँव में कोई नाली आदि नहीं है जिससे भैंसों का खून आदि रास्ते में बहेगा। इस साक्षी से पृच्छा में जन स्वास्थ्य के बारे में एक भी शब्द नहीं पूछा गया, केवल अन्तिम सुझाव दिया गया कि घर के अन्दर कुर्बानी करने से खून आदि बहने का प्रश्न नहीं उठता, जिसे इस साक्षी ने इन्कार किया। इसके अतिरिक्त प्रतिवादी साक्षी नं. ६ डाक्टर मेहरोत्रा ने प्रथम प्रदर्शक-६ सिद्ध किया और बताया कि मेरे पूर्व डाक्टर श्री शर्मा ने यह प्रपत्र जारी किया था। पृच्छा में इस साक्षी ने स्वीकार किया कि जानवरों की बलि देने से बावत प्रमाणपत्र जारी करने के लिए पशुचिकित्सक अधिकृत नहीं है और न ही पशु चिकित्सक पशुबलि के लिए कोई आदेश अथवा स्वीकृति देना भी निश्चित नियमों के तहत है, जिसमें पशुओं का वध बूचड़खाना में ही हो सकता है, खुले स्थान में नहीं। खुले स्थान में पशुवध करना प्रतिबन्धित है। विवादित गाँव सहिलामऊ में कोई बूचड़खाना नहीं है। बड़े जानवरों को बूचड़खाने के अतिरिक्त अन्य किसी जगह पर काटना प्रतिबन्धित है। ऐसी दशा में यदि खुले स्थान में जानवर काटा जाता है तो निश्चय ही साम्प्रदायिकता भड़केगी एवं समाज में घृणा फैलेगी, उनके खून के बहाव एवं हाड़ आदि की दुर्गंध से बीमारियाँ भी फैलने का अंदेशा रहेगा। यही नहीं, इस तथ्य को ध्यान में रखकर ही सम्भवत: प्रदर्श क-१ आदेश परगनाधिकारी कुमारी लोरेशन, दिगोजा एवं क्षेत्राधिकारी सुभाष जोशी ने जारी किया है।

उपरोक्त व्याख्या के आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि विवाद्यक नं.-७ वादीगण के अनुकूल एवं प्रतिवादीगण के प्रतिकूल निर्णीत किया जाता है।

शेष भाग अगले अंक में.....

एक ऐतिहासिक ईश्वर-प्रार्थना

(यह भजन एक लम्बे समय तक समाजों में भक्तिभाव से गाया जाता था। इसके रचयिता धर्मवीर महाशय रौनकराम जी 'शाद' भदौड़ (बरनाला) निवासी थे जिन्होंने बड़े तप, त्याग व कष्ट सहन करके आर्य समाज में एक नया इतिहास रचा था। काल कोठरी में भी वह नित्य प्रति अपना यह गीत मस्ती से गाया करते थे। उनकी मस्ती, चित्त की शान्ति से जेल रूप नर्क-स्वर्ग बन गया। **राजेन्द्र 'जिज्ञासु'**)

हे जगत् पिता, हे जगत् प्रभु
मुझे अपना प्रेम और प्यार दे।
तेरी भक्ति में लगे मन मेरा,
विषय वासना को विसार दे।।
मुझे ज्ञान और विवेक दे,
मुझे वेदवाणी में दे श्रद्धा।
मुझे मेधा दे, मुझे विद्या दे,
मुझे बल दे और आरोग्यता।
मुझे आयु दे, मुझे पुष्टि दे,
मुझे शोभा लोक के मध्य दे।।
मुझे धर्म कर्म से प्रेम दे,
तजूँ सत्य को न कभी मैं।
कोई चाहे सुख मुझे दे घना,
कोई चाहे कष्ट हजार दे।।
कभी दीन होऊँ न जगत् में मैं,
मुझे दीजे सच्ची स्वतन्त्रता।
मेरे फंद पाप के काट दे,
मुझे दु:ख से पार उतार दे।।
रहूँ मैं अभय न हो मुझको भय,
किसी मित्र और अमित्र से।
तेरी रक्षा पर मुझे निश्चय हो,
मेरे वह रूपन को तू टार दे।।
मुझे दुश्चरित से परे हटा,
सतचरित का भागी बना मुझे।
मेरे मन को वाणी को शुद्ध कर,
मेरे सकल कर्म सुधार दे।।
मेरा हृदय कष्ट भय रहित हो,
नित्य मिले मुझे शान्ति हर जगह।
मेरे शत्रुगण सुमति गहें,
कुमति को उनकी निवार दे।।
तेरी आज्ञा में मैं चलूँ सदा,
तेरी इच्छा में मैं झुका रहूँ।
कभी डूबे 'शाद' अधीरता में,
तो तू उसको भी उबार दे।।

एक महान् कर्मयोगी का महाप्रयाण

- डॉ. रामप्रकाश वर्णी

युगपुरुष महर्षि स्वा. दयानन्द की उस दिव्यैषणा जो कि उन्होंने तदानीन्तन महाराणा जो के अनुरोध पर फाल्गुन कृष्णा ७/१९३९ वि.सं. को चित्तौड़गढ़ पहुँचकर, वहाँ की रानी पद्मिनी के जौहर और महाराणाओं के त्याग और शौर्य से सम्भृत स्वमातृभूमि के प्रति विहित आत्मोत्सर्ग के इतिवृत्त को सुनकर, भावविह्वल होकर सजल नयनों से अपने प्रिय शिष्य स्वा. आत्मानन्द सरस्वती के समक्ष प्रकट की थी, ''चित्तौड़गढ़ वह पुण्यभूमि है जिसको देखकर प्रत्येक मनुष्य अपने कर्त्तव्यपालन के लिए प्रोत्साहित होता है, अत: निस्सन्देह यह अत्यन्त कल्याणात्मक बात होगी, यदि चित्तौड़गढ़ में गुरुकुल स्थापित हो जावेगा। हमारे देश के नवयुवक अपने जीवन की उन्नति के लिए सर्वोत्तम शिक्षा इसी स्थान पर प्राप्त कर सकेंगे।'' महर्षि का हार्द-अभिलाष उनके असामयिक निधन के कारण तब तो पूर्ण नहीं हो सका, किन्तु उसको प्रो. ताराचन्द्र गाजरा द्वारा लिखित The Life of Swami Dayanand में पढ़कर तच्छिष्यानुशिष्य ''गुरुकुल काँगड़ी-हरिद्वार'' विद्यातपोभ्यां नितान्त निर्मल स्वान्त आदित्य ब्रह्मचारी युधिष्ठिर विद्यालङ्कार ने संन्यस्त होकर 'वर्णिन् व्रतमेव धनन्ते' सदृश श्रुतिसुखद-मुखर-मधुर आराव को हृदयङ्गम कर 'व्रतानन्द' बनकर 'उदयपुरनगर' में आश्विन शुक्ला नवमी वि.सं. १९८४ में ०८ ब्रह्मचारियों को लेकर एक गुरुकुल का समारम्भ करके पूर्ण किया। नाना अन्तराय सम्पात के भीमावर्तों में आघूर्णित होते हुए यही गुरुकुल माघ पूर्णिमा वि.सं. १९८६ में 'चित्तौड़नगर' में स्थानान्तरित होकर कुछ काल तक चित्तौड़-दुर्ग की अधित्यका में अधिष्ठित भाड़े के भवनों में सञ्चालित होते हुए वि.सं. १९८७ सन् १९३१ ई. में 'चित्तौड़गढ़-रेलवे स्थान' के सन्निकट अपने वर्तमान सुरम्य प्राङ्गण में आ गया। यहाँ पर पू. स्वा. व्रतानन्द जी महाराज ने सतत् सावहित साधनारत रहकर देश के तात्कालिक विद्वत्तल्लजों को आचार्योपाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित करके आर्ष पद्धति से ब्रह्मचारियों को वैदिक-लौकिक उभयविध वाङ्मय और उत्तम चारित्र्य की शिक्षा प्रदान करना आरम्भ किया। शुक्ल पक्षीय द्वितीया की चन्द्रचन्द्रिका की भाँति निरन्तर उपचीयमान यह भव्य और दिव्यधाम रूप गुरुकुल अपनी यश:सुरभि को दिग्दिगन्त में विकीर्ण करते हुए जग-गण-मन को प्रसह्य अपनी ओर समाकृष्ट करने में समर्थ होता चला गया। इसी यश: सौरभ का आघ्राण करके अजमेर जनपद के 'ब्यावर' नगर के प्रसिद्ध नागर श्री मूलचन्द जी के पुत्र श्री महादेव जी ने ई. सन् १९४२ में आत्म-प्रेरित होकर अपने पुत्र 'यज्ञदेव' को इस गुरुकुल में प्रवेश दिलाया।

शुचि-रुचि रोचिष्णु श्रद्धा-सुमेधा सम्पन्न इस दृढ़व्रती वर्णी ने श्रवण-मनन-निदिध्यासन पूर्वक अधीति-बोध-आचरण और प्रचारण से अपने अर्च्य आचार्यों और समानधर्मा सतीर्थ्यों को प्रसह्य अपनी ओर आकृष्ट किया तथा पुष्टि-तुष्टि, रति-धृति के द्वारा शक्ति-स्वस्ति का निष्कलुष लाभ लेकर स्व और स्वकुल को धन्य-धन्य कर दिया।

चारु-चारित्र्यचित्रित सारस्वत सत्र रूप अनन्ताध्वन के अथक अध्वा इस विचित्र यज्वा ने स्वल्पकाल में अपनी अशेष शेमुषी का समुचित सदुपयोग करते हुए वेद-वेदाङ्गों का तलस्पृक्-वैदुष्य अर्जित कर अपना कीर्तिकेतु दिग्दिगन्त में फहरा दिया। तत्कालीन 'वाराणसेय सं. विश्ववि. वाराणसी, (उ.प्र.) से 'वेद एवं नैरुक्तप्रक्रिया' विषय में 'आचार्य' परीक्षा सर्वोच्च अङ्कों से उत्तीर्ण कर आगरा वि.वि. आगरा, (उ.प्र.) से संस्कृत विषय में 'एम.ए.' परीक्षा 'स्वर्ण पदक' प्राप्त करके उत्तीर्ण की। इसके अनन्तर 'गुरुकुल-चित्तौड़गढ़ (रा.प्र.)' की 'वेदवागीश' परीक्षा जो कि इस गुरुकुल की सर्वोच्च और अन्त्य परीक्षा थी, भी 'शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनवाजसनेयिसंहिता' को विषय बनाकर ९३ प्रतिशत अङ्कों से उत्तीर्ण कर अपने परीक्षकों को चमत्कृत कर दिया। अब वे ब्र. यज्ञदेव से आचार्य यज्ञदेव वेदवागीश 'वेदायन' जी बन गये थे।

इसके बाद वे सम्भवत: एक वर्ष तक उत्तरप्रदेशस्थ 'मेरठ कॉ.मेरठ' में संस्कृत-विभाग में यशस्वी प्राध्यापक के रूप में रहे, किन्तु उनके परमशिवैषी आचार्य स्वा.

व्रतानन्द जी को तो उनसे कुछ और ही कराना अभिप्रेत था, अत: उन्होंने बलपूर्वक अपने कठोर और स्नेहिल आदेश से उन्हें उक्त कॉलिज से त्यागपत्र देकर पुन: गुरुकुल में आने को विवश कर दिया। इस प्रकार यहाँ आकर इनके जीवन की द्वितीय पाली प्रारम्भ हुई। अब वे गुरुकुल के 'मुख्याधिष्ठाता' पद पर अधिष्ठित कर दिये गये। उस समय गुरुकुल के चारों ओर भयङ्कर वन और उसमें हिंसक वन्यप्राणियों की विभीषिका भरी आवाजें तथा विषमविषज्वालभरति सरीसृपों की सणत्कार के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था। भवनों, भूमि और संसाधनों का अत्यन्ताभाव पदे-पदे मार्ग में अवरोध बनकर खड़ा था। साथ ही सांसारिक छलछद्म से कोशों दूर रहने वाले दुग्ध-धवल-अमल-कुल्येव भास्वर भाल मुग्धमना स्वामी व्रतानन्द जी ने गुरुकुल के सञ्चालन हेतु इतस्तत: प्रभूत धन राशि ऋण के रूप में धनिकों से ले रखी थी। परिणामत: यह गुरुकुल कर्ज के दल-दल में आकण्ठ विमग्न हो चुका था। इस प्रकार मुख्यअधिष्ठाता श्री 'वेदायन' जी के सामने एक ओर समस्त संसाधनों को जुटाकर गुरुकुल के सफल सञ्चालन की अतिविकट संकटाकीर्ण समस्या थी तो दूसरी ओर गुरुकुल को ऋणमुक्त और आत्मनिर्भर बनाने की दुर्घर्ष चुनौती भी थी। इसके लिए उन्होंने '**मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्तिशूरा:.....कन्दर्पदर्पदलनेविरला मनुष्या:**' को जानते हुए भी यावज्जीवंब्रह्मचारी रहने की भीष्म प्रतिज्ञा की और यह निहत्था ही महारथी संसार समर में दिग्विजय हेतु कूद पड़ा, जबकि कुछ साथी 'ऊढ' होते हुए भी 'अनूढ' रहने के लिए रक्ताक्त हस्ताक्षर करके प्रतिज्ञात होने के बाद भी पुन: 'ऊढ' हो चुके थे। इन्होंने अहर्निश कठोर परिश्रम करके 'रायपुरिया' में स्थित विशाल कृषिक्षेत्र को 'मानसिंह ग्रुप' से दान के रूप में प्राप्त करके मरणान्तक कष्ट झेलते हुए उस पर गुरुकुल का कब्जा कराया तथा कृषि कार्य हेतु एक 'मैसी-ट्रैक्टर' जो कि आज भी है, दान में प्राप्त करके असम्भव को भी सम्भव बनाकर दिखा दिया। गुरुकुल में नव्य -भव्य-भवन भी बने, जिनमें 'गोविन्द भवन' प्रमुख है। तब सन् १९८० ई. में स्वा. व्रतानन्द जी यश: शेष हुए तो उन्हीं के कुछ स्नातकों ने दुरभिसन्धिपूर्वक स्वामी जी के मिथ्या हस्ताक्षरों से एक 'झूंठी वसीयत' तैयार कराकर गुरुकुल पर अपना दावा ठोक दिया। महाभारत के अभिमन्यु की भाँति एक ओर सात-सात सशस्त्र महारथी दूसरी ओर निहत्था अभिमन्यु रूप यह एकाकी अरथी। उभयपक्ष में तुमुल संग्राम हुआ। महाभारत का अभिमन्यु तो छलपूर्वक मार डाला गया, किन्तु यह अभिमन्यु उन सभी को पराजित कर अतिविषम तद्रचित चक्रव्यूह को तोड़कर विजय पताका फहराते हुए बाहर निकल आया। अब ये इतने अनुभवी और नीतिनिपुण हो चुके थे कि थोड़े से ही समय में लगकर कार्य करके भारतवर्षीय यज्ञशालाओं में अद्वितीय 'आर्षगुरुकुल' एटा उ.प्र. की 'यज्ञशाला' को भी मात देने वाली सर्वथा सर्वात्मना अनुपम यज्ञशाला के निर्माणता बने। इसके साथ ही सम्पूर्ण गुरुकुल परिसर और रायपुरियास्थ 'कृषिक्षेत्र की ७-१० फुट ऊँची चारदीवारी बनाकर सभी प्रकार की क्षतियों से उसे विक्षत बना दिया। गोशाला, विद्यालय और छात्रावास एवं कई अतिथिशालाओं को सुसज्जित बनाकर एक सुतुच्छ बीज को 'विशाल-वटवृक्ष' का रूप देकर वे अपने कीर्तिशेष गुरुवर्य स्वा. व्रतानन्द जी की आशा-प्रत्याशाओं के साधु संवाहक बने।

अभी मैं जब २२ से २४ जुलाई २०१६ तक उनके सान्निध्य में अध्युषित रहा तो उन्होंने 'गुरुकुल परिसर' से लेकर 'रायपुरिया-कृषिक्षेत्र' तक का सूक्ष्मवीक्षण कराया और अन्त में 'गोविन्दभवन' में बनाये गये उस विशाल 'अन्न भण्डार' को भी दिखाया जो गोधूम आदि अन्नों से परिपूर्ण था। उन्होंने बताया कि वर्ष में दो बार हमको पाँच-पाँच सौ बोरियों से भी अधिक अन्न कृषिक्षेत्र से प्राप्त हो जाता है तथा हमने 'गम्भीरी नदी' के तट पर स्थित खेत को बेचकर सम्भवत: चार करोड़ रु. की एक 'स्थिरनिधि' बना दी है, जिससे हमें लाखों रु. प्रतिमास सूद के रूप में प्राप्त हो जाता है। अब हम गुरुकुल के लिए किसी से दान नहीं लेते हैं। यदि कोई भूल से दान देता भी है तो हम विनम्रता पूर्वक वापिस कर देते हैं। इस प्रकार अब हमारा यह गुरुकुल सब भाँति आत्मनिर्भर हो गया है। फिर भी मुझे विगत कुछ वर्षों के घटनाक्रम और अब भी कुछ-कुछ गुरुकुल विरोधी तत्त्वों की दुश्चिकीर्षाओं को याद करके और सोच-सोचकर बहुत दु:ख होता है और मेरा

'रक्तचाप' बढ़ जाता है। इस पर मैंने उन्हें सर्वविध तनावमुक्त रहने का व चिकित्सक की तरह ही परामर्श दिया तो वे गम्भीर होकर थोड़ी देर बाद मुस्कराये और बोले 'तनाव किया नहीं जाता है, हो जाता है।' उन्होंने चलते समय २४/८/२०१६ ई. को अपनी एक लेखमाला मुझे दी और कहा 'इसको ग्रन्थ का रूप देना है।' मेरे लिए उनका अन्तिम सन्देश था-''तूफानों से कश्ती को लाये हैं निकाल के,

मेरे बच्चो, तुम रखना इसको सम्भाल के''

मैं खुशी-खुशी गुरुकुल चि. से एटा लौट आया मुझे तनिक भी कहीं से भी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि आचार्य जी इतनी जल्दी चले जायेंगे। लगता है उन्हें इससे भी कहीं ज्यादा कोई और कार्य करना था, इसलिए वे देश के स्वतन्त्रता दिवस पर गुरुकुल से भी स्वतन्त्र हो गये। इस धरती पर उनका कीर्तिकलाधर यावच्चप्रद्दिवाकारीं चमके गा भले वे यहाँ सशरीर न रहें।

मैं उनके समग्र कर्त्तृव्य को सश्रद्ध प्रणाम करता हूँ।

यजुर्वेद परायण महायज्ञ

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द उद्यान, जमानी आश्रम, इटारसी में आचार्य सोमदेव देव की प्रेरणा से दिनांक २३ से २७ नवम्बर २०१६ तक यजुर्वेद पाराण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहाहै। लोक कल्याणार्थ होने वाले इस महायज्ञ में २०० किलो (५ मन) घी की आहुतियाँ दी जायेंगी। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. धर्मवीर (प्रधान, परोपकारिणी सभा, अजमेर) रहेंगे। यजमान पद को आचार्य सोमदेव-अजमेर सुशोभित करेंगे। जिज्ञासु महानुभावों की ज्ञान-पिपासा को शान्त करने के लिये स्वामी अमृतानन्द, आचार्य कर्मवीर, स्वामी ऋतस्पति, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी आदि भी उपस्थित रहेंगे। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

आयोजक-परोपकारिणी सभा, अजमेर, (महर्षि दयानन्द उद्यान जमानी आश्रम, इटारसी, म.प्र.)

व्यवस्थापक- आचार्य सत्यप्रिय आर्य

(७५०९७०६८२८)

गंजोटी (महाराष्ट्र) यात्रा के समय रेल में रचा गया गीत

यह धरती बलिदान की

इस मिट्टी को नमन हमारा, यह धरती बलिदान की।
जाति को झकझोर जगाया, जननी वेद जवान की।।
सीस कटाकर बन्धन काटे, वेद वीर बलिदानी ने।
सबने देखा, कर दिखलाया, जो वीरों ने ठान ली।।
निकल पड़े दिलजले अनेकों, उससे पाकर प्रेरणा।
याद सभी हैं धर्म दुलारे, 'काशी'[१] ने भी जान दी।।
याद हमें 'व्यङ्कटेश्वर'[२] नन्हा मन्नानूर का पिंजरा भी।[३]
शीश तली धर निकले साधु, कैसी मीठी तान थी।।
'धर्म', 'भीम', 'गोविन्द', 'शिवाजी',[४] निर्भय योद्धा वीर थे।
जग ने देखा झुक गई, झुक गई गर्दन मीर उस्मान की।।
चींटी टक्कर लेने निकली, पर्वत देखो सरक गया।
देख 'स्वतन्त्र' स्वामी नामी[५] दुनिया सब हैरान थी।।
हरिपन्त, हरिश्चन्द्र गुरु तक[६] इक स्वर्णिम इतिहास है।
मर-मर कर हम जी उठते हैं, हुपला[७] की सुर तान थी।।
हम वीरों के वंशज हैं, वीरों की याद मनायेंगे।
सेवा करना धर्म हमारा, ललक हमें निर्माण की।।
जिसके कारण भारत जागा, डोल गया निष्ठुर अन्यायी।
यह धरती बलिदान की, धरती वेद जवान की।।
घर-घर यह सन्देश सुनाओ, सत्कर्मों का यज्ञ रचाओ।
ज्ञान प्रभु का वेद अनादि, वाणी है भगवान् की।।

टिप्पणी

१. वीर हुतात्मा काशीनाथ धारुर २. गुलबर्गा का बाल कुमार धर्मवीर ३. यहाँ पिंजरे में पं. नरेन्द्र जी बन्दी बनाये गये। ४. हुतात्माओं के नाम हैं ५. लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ६. गंजोटी क्षेत्र के दो आर्य सेनानी ७. हुपला जहाँ सर्वप्रथम भीमराव के परिवार को जीवित जलाया गया।

दक्षिण के आर्य शहीदों की याद में आयोजित गंजोटी के महोत्सव के लिये विशेष रूप से रचा गया गीत।

-राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर **'मन्त्री, परोपकारिणी सभा'** अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाईन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

हा! बीत गया वो स्वर्णिम युग

''परोपकारिणी सभा के प्रधान डॉ. धर्मवीर जी नहीं रहे।'' जिसने भी ये शब्द सुने, उसने पलटकर ये जरूर कहा ''मुझे विश्वास नहीं हो रहा है, किसी और से बात करवाइये।'' कुछ लोगों की यह भी प्रतिक्रिया थी ''ऐसा कैसे हो सकता है? कुछ दिन पहले ही तो ऋषि मेले की सूचना देने आये थे, तब तो पूर्ण स्वस्थ थे।'' पहली बार में तो किसी को भी विश्वास नहीं हुआ, जो बता रहे थे उनको भी नहीं, जिन्होंने उस अन्त समय को अपनी आँखों से देखा- उनको भी नहीं। सभी एक दूसरे को आशा भरी नजरों से देख रहे थे कि कोई उनसे कहे- ''धर्मवीर जी को कुछ नहीं हुआ है, वे बिलकुल ठीक हैं।'' पर यह सम्भव नहीं था, क्योंकि ऋषि दयानन्द, आर्य समाज, राष्ट्र और संस्कृति का एक सजग प्रहरी सदा के लिये जा चुका था। समय ठहर सा गया। लगा कि मानो कोई बुरा सपना देख रहे हों, आँख खुलते ही सब ठीक हो जायेगा। पर यह सपना है कि रुकने का नाम ही नहीं लेता, चलता ही जा रहा है। इस घटना की कल्पना तक किसी ने नहीं की थी। डॉक्टर के ये बताने पर भी कि स्थिति गम्भीर है- किसी को लगा ही नहीं कि ये सच है।

पर यही सच था। ऋषि दयानन्द की सेना का सबसे योग्य सैनिक शहीद हो गया था। वो अकेला ही सब पर भारी था, उसकी उपस्थिति मात्र ही ऊर्जा देने वाली थी। वे अकेले ही पूरी सेना के बराबर थे। उनकी पुत्री के शब्दों में कहा जाये तो ''तुरूप का इक्का''- जीतेगा ही जीतेगा, हार का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। परिस्थिति कोई भी हो, मुश्किलों में बस एक ही समाधान था- 'धर्मवीर'। ये केवल नाम नहीं था, सबके अन्दर विद्यमान एक अप्रत्यक्ष ऊर्जा थी, जिसके रहते कुछ भी असम्भव नहीं लगता था। सभा के लिये धन संग्रह से लेकर वेद की ऋचाओं के विवेचन तक सब कुछ उनके लिये सहज था। जब वे लिखते थे तो पढ़ने वालों की आँखें खुली रह जातीं, बोलते थे तो बाकि कुछ सुनने का मन नहीं करता था। सरलता व सादगी के धनी डॉ. धर्मवीर जी में सबको जोड़कर और पिरोकर रखने की अद्‌भुत क्षमता थी। ऐसे व्यक्तित्व के विषय में किसी ने भी नहीं सोचा था कि वे सबको इस तरह बीच में ही छोड़कर चले जायेंगे।

वह सम्पूर्ण घटनाक्रम आँखों के सामने ही है। सबने भरपूर कोशिशें कीं, पर ईश्वर की व्यवस्था के सामने सभी प्रयास निष्फल होते चले गये। अपनी अन्तिम प्रचार-यात्रा पर जब वे निकले तो स्वस्थ थे। २० सितम्बर को जबलपुर के वार्षिकोत्सव के लिये उनकी धर्मपत्नी 'ज्योत्स्ना जी' भी साथ में जाने वाली थीं। पर कुछ आवश्यक कारणों से ज्योत्स्ना जी को अपनी यात्रा स्थगित करनी पड़ी। वे अकेले ही अपनी यात्रा पर चल दिये। जबलपुर पहुँचकर सभा के कार्यकर्त्ता सत्यप्रिय जी को बुलाकर सबसे उनका परिचय करवा दिया, अपने कार्यकर्त्ता को अपने कार्य हस्तान्तरित करते गये। जब जबलपुर का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ तो भेंट में मिली सभी वस्तुयें उनके हाथ में थमाते हुये बड़े सरल, सहज भाव से बोले 'ले, ये तू रख!' उनकी विद्या विनय के रूप में उनके व्यवहार में भी थी। अपने लिये उन्होंने कोई व्यावहारिक दायरा नहीं बनाया हुआ था। जिससे भी मिलते थे तो लगता था कोई उनका वर्षों पुराना परिचित हो।

२५ सितम्बर को जबलपुर का कार्यक्रम सम्पन्न करके गाजियाबाद के पिलखुआ आर्यसमाज में आये। यहाँ पर उन्हें सात दिन तक आर्यसमाज के उत्सव में रहना था, पर कुछ दिनों बाद वे स्वयं को अस्वस्थ अनुभव करने लगे। उन्हें लगा कि सामान्य रोग है, ठीक हो जायेगा, इसलिये उसे गम्भीरता से भी नहीं लिया। अस्वस्थ होते हुये तथा कष्ट झेलते हुये भी निरन्तर व्याख्यान देते रहे। अन्तिम दिन तो व्याख्या भी न दे सके, पर अपनी सेवा के लिये किसी को कष्ट नहीं दिया।

कार्यक्रम की समाप्ति पर ज्योत्स्ना जी ने कहा कि 'आप बीमार हैं तो ट्रेन से मत आना, गाड़ी भेज रहे हैं, उसमें आना।' पर उन्होंने मना कर दिया और ट्रेन से ही अजमेर तक आये। स्टेशन पर उन्हें लेने गये तो 'धर्मवीर जी' गाड़ी से बाहर नहीं उतरे। कार चालक श्यामसिंह जी ने जब रेल कर्मचारी से पूछा तो उसने बताया कि एक

सज्जन अन्दर ही बैठे हैं। जाकर देखा तो पता चला कि वे चलने तक में असमर्थ हैं, बस बैठे हुये हैं। वह यात्रा उन्होंने कैसे पूरी की होगी, कितनी पीड़ा हुयी होगी, लघुशंका आदि के लिये कैसे गये होंगे- ये सब सोचकर ही हृदय सहम जाता है। इतने पर भी किसी को अपनी व्यथा नहीं बतायी। 'किसी को मेरे कारण कष्ट न हो' बस यही सोचकर सारा दर्द अन्दर ही दबाये रखा। उनकी ऐसी अवस्था देखते ही चालक के होश उड़ गये। उनकी ऐसी स्थिति अकल्पनीय थी। उनका सामान बाहर रखकर उन्हें सहारे से बाहर लाकर बैठाया। व्हील चेयर की सहायता से कार के पास तक लाया गया। दुर्भाग्य था या कुछ और? पता नहीं। लेकिन कार स्टार्ट नहीं हो रही थी। शायद उसकी बैटरी खराब हो गई थी। ऋषि उद्यान में फोन करके दूसरा वाहन और सहायता के लिये गुरुकुल के कुछ विद्यार्थियों को आने के लिये कहा। स्थिति की गम्भीरता को देखते हुये आचार्य सत्यजित् जी विद्यार्थियों के साथ स्वयं ही आये।

ऋषि उद्यान पहुँचने पर उन्हें तुरन्त हॉस्पिटल ले जाकर आपातकालीन व्यवस्था में चिकित्सक को दिखाया। दवाइयाँ दी गयीं, परीक्षण किये गये। शाम को वापस ऋषि उद्यान आ गये। भोजन में उन्होंने कुछ दूध लिया और बोले "वैसे तो मैं ठीक हूँ, पर शरीर ही साथ नहीं दे रहा।" दवाईयाँ लेकर बिस्तर पर लेट गये। जो विद्यार्थी उनकी सेवा में थे, उन्हें जाने के लिये कहा और बोले कि 'मेरे कारण आप लोग क्यों परेशान होते हो।' पर विद्यार्थी सेवा में ही रहे, रातभर पास में जागते रहे। स्वास्थ्य ठीक नहीं था, इसलिये उन्हें नींद भी नहीं आ रही थी। रात को कई बार शौच के लिये गये। लघुशंका ठीक से नहीं कर पा रहे थे। रात दो बजे के करीब विद्यार्थियों से बोले कि मुझे टहलता है, बाहर ले चलो। सहारा देकर दोनों विद्यार्थी उन्हें दरवाजे तक लाये तो पैर लड़खड़ाने लगे, शरीर काँपने लगा, इसलिये फिर टहलने नहीं गये और वापस बिस्तर पर लेट गये। प्रातःकाल थोड़ा फलों का रस लिया। पहले तो अपने हाथों से गिलास तक भी नहीं पकड़ पा रहे थे, पर अब अपने हाथों से गिलास को पकड़ा। ये देखकर सामने खड़े लोगों को कुछ सान्त्वना मिली। लेकिन कुछ देर बाद स्वास्थ्य फिर से बिगड़ने लगा। डॉक्टर को फोन करके हॉस्पिटल पहुँचे तो डॉक्टर ने देखते ही आई.सी.यू. में भर्ती कर लिया। चिकित्सा शुरू हो गयी। संक्रमण के कारण किडनी का कार्य प्रभावित हो गया था। उसके उपचार के लिये डायलेसिस की प्रक्रिया की गयी। रात को एक बार रक्तचाप आदि में कुछ सुधार दिखाई भी दिया, पर ६ अक्टूबर सुबह लगभग पाँच बजे स्थिति फिर से गम्भीर होनी प्रारम्भ हो गई। हृदय का स्पन्दन धीमा होने लगा, धड़कने रुक सी रहीं थीं। जीवनभर देश व समाज के लिये पहरा देने वाला प्रहरी स्वयं सोने के लिये जा रहा था। भोर हो चुकी थी, अब उसे भी विश्राम करना था, और हमें जागना था। अपने दायित्व का निर्वाह पूर्ण निष्ठा से करके आने वाली पीढ़ी को जिम्मेदारी सौंप दी।

डॉक्टरों ने अन्तिम प्रयास के रूप में जो हो सकता था, सब किया, पर सब व्यर्थ। हृदय की गति रुक गई, मशीन की स्क्रीन पर धड़कने शून्य थीं। पंछी निकल चुका था। जो सामने था, वह एक भौतिक शरीर मात्र था। घर यहीं था, पर घर में रहने वाला कहीं और जा चुका था। यह सारी घटना वहाँ पर उपस्थित लोगों के सामने ही घट रही थी, सब कुछ खुद को ठगा सा महसूस कर रहे थे। ईश्वर से बस यही शिकायत थी कि कम-से-कम एक अवसर तो देना चाहिये था ना! एक ही झटके में सब कुछ छिन गया। सब कुछ रेत की तरह हाथ से फिसलता गया और हाथ खाली रह गये। पार्थिव शरीर को ऋषि उद्यान लाकर सरस्वती-भवन में रखा गया। कुछ ही देर बार अन्तिम दर्शनों के लिये लोगों का तांता लग गया।

७ अक्टूबर की सुबह अजमेर के पृथ्वीराज मार्ग पर लोगों और वाहनों की एक लम्बी कतार थी। हजारों लोग सड़क पर पंक्ति में ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना के मन्त्रों का पाठ करते हुये चल रहे थे। सबकी आँखें नम थीं, विशेष गुणों से युक्त विशेष आत्मा के प्रति विशेष सम्मान था। अजमेर निवासियों ने कई शोभा यात्राएँ देखी थीं, पर किसी शवयात्रा के पीछे इतना बड़ा जनसैलाब उन्होंने पहली बार देखा था। जो सम्मान किसी नेता के लिये भी दुर्लभ होता है, यह आत्मा उस सम्मान की सहज अधिकारी थी। पार्थिव शरीर को पहले उनकी कर्मस्थली परोपकारिणी

सभा में ले जाया गया, फिर उनके पुराने घर से होते हुये ''दयानन्द मुक्तिधाम'' मलूसर में यात्रा का समापन किया गया। अन्तिम संस्कार के लिये शरीर को वेदी पर रखकर पार्थिव शरीर का होम किया गया। अब केवल और केवल स्मृतियाँ ही शेष बची थीं और बच गई थी वो ऊर्जा जिसे अब तक वे सबमें भरते आये थे।

अन्त्येष्टि संस्कार के पश्चात् सभी विद्वानों ने अपनी भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। जिस स्थान पर ऋषि दयानन्द के शरीर की यात्रा समाप्त हुई थी, उसी श्मशान मलूसर, अजमेर में दयानन्द के सैनिक की भी यात्रा का समापन हुआ। पं. लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द की बलिदान शृंखला में एक और कड़ी जुड़ गई और इसी के साथ नि:स्वार्थ समाज सेवा का एक और अध्याय समाप्त हो गया।

अगले दिन ९ अक्टूबर को श्रद्धाञ्जलि सभा में देश के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने प्रेरणामय जीवन को याद करते हुये उन्हें अपनी-अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की-

श्रद्धा के पुष्प

*** आचार्य देवव्रत (राज्यपाल-हि.प्र.)**- यदि हजार व्यक्ति एक तरफ हों तो भी दूसरी तरफ वो अकेला शेर काफी था। लिखते थे तो उनका कोई सानी नहीं था। मन्त्रों पर बोलने वाला उन जैसा कोई वक्ता नहीं था। व्यंग करने लगें तो लोटपोट कर दें। आर्यसमाज में लम्बे अन्तराल के बाद ऐसा व्यक्तित्व पैदा हुआ, जिसमें पं. लेखराम व गुरुदत्त के दर्शन होते थे। वो जिस सोच को जनमानस तक पहुँचाना चाहते थे, उसे पूरा करने का हमें संकल्प लेना चाहिये।

*** डॉ. सत्यपाल सिंह (सांसद बागपत, उ.प्र.)**- ये आर्य जगत् का महादुर्भाग्य है कि धर्मवीर जी अब हमारे बीच नहीं है। मैं उन्हें वैदिक साहित्य का चलता-फिरता कोश मानता हूँ। उन्होंने शैल्डन पोलाक जैसे संस्कृति विनाशकों के बारे में जो लेख लिखा, उससे प्रेरणा लेकर हम संस्कृति की रक्षा का संकल्प लें।

*** श्री तपेन्द्र कुमार (पूर्व मुख्य सचिव-राजस्थान सरकार)**- जिन कार्यक्रमों में कभी २०-३० लोग होते थे, उनमें आज हजारों की संख्या में लोग होते हैं। जो पत्रिका कभी ४-५ सौ की संख्या में छपती थी, आज वो पत्रिका १४-१५ हजार की संख्या में छपती है। जिस परोपकारिणी सभा को कुछ शहरों में जाना जाता था, वो आज विदेशों में भी प्रतिष्ठित है- ये सब धर्मवीर जी की ही देन है।

*** श्रीमती सुयशा आर्या (सुपुत्री- डॉ. धर्मवीर जी)**- तत्ता (पिता जी) को देखकर हमें लगता था कि हम विशिष्ट बच्चे हैं। अमेरिका में मैं जब किसी बात पर निरुत्तर हो जाती थी, तो कहती थी कि अपने पिता जी से तुम्हारी बात कराती हूँ, वे तुम्हारी हर बात का जवाब देंगे। उनके सामने शैल्डन पोलाक जैसा व्यक्ति भी नहीं टिक पाता।

पर आज हम फिर विशिष्ट से सामान्य हो गये।

*** प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु**- धर्मवीर जी किसी सामान्य परिवार में नहीं जन्में थे। उनके पिता पं. भीमसेन जी एक क्रान्तिकारी, स्वतन्त्रता सेनानी थे। धर्मपत्नी ज्योत्स्ना जी भी एक क्रान्तिकारी परिवार से ही हैं। सभा को वे जिस ऊँचाइयों तक ले आये हैं, ये अपने आप में एक असाधारण बात है। आज आर्यसमाज ने एक हीरा खो दिया।

*** श्री सत्येन्द्र सिंह (न्यासी- परोपकारिणी सभा)**- ये एक भयंकर दुर्घटना है कि डॉ. धर्मवीर जी हमारे बीच नहीं रहे। उन जैसा वक्ता, विद्वान्, पत्रकार आज दिखाई नहीं देता। ईश्वर इस असह्य दु:ख की घड़ी में परिवार को शक्ति प्रदान करे।

*** श्री गोपाल बाहेती (भूतपूर्व विधायक-अजमेर)**- डॉ. धर्मवीर जी एक निर्भीक वक्ता, लेखक, विद्वान् थे। आज ऋषि उद्यान में बाग हैं, बगीचे हैं, पर खुशबु नहीं है। वे प्रत्येक राष्ट्रीय समस्या पर बड़े बेबाक सम्पादकीय लिखते थे। यह क्षति अपूरणीय है।

*** आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक**- डॉ. धर्मवीर जी का व्यवहार मेरे प्रति बड़े भाई के जैसा था। वे मान-अपमान में सदैव सहज रहे। ''परोपकारी पत्रिका'' का सम्पादकीय मैं सदैव पढ़ता था। उनके जाने से केवल परोपकारिणी सभा की ही नहीं अपितु पूरे देश की क्षति हुई है।

*** श्री त्रिभुवन राजभंडारी (समधी- डॉ. धर्मवीर जी)**- डॉ. धर्मवीर जी के रूप में समधी को पाकर हमारा परिवार समृद्ध हो गया है। वो विद्वान् थे, पर विद्वत्ता उन पर हावी नहीं थी।

* **डॉ. जगदेव**- उनके जीवन में विलक्षणता थी, आनन्द था। महर्षि दयानन्द ने जिस सत्य के लिये अपना जीवन दिया, डॉ. धर्मवीर जी उस सत्य के लिये जीवनभर लगे रहे। गृहस्थ होते हुये भी उनका जीवन विरक्त था। उनके जीवन में उनकी धर्मपत्नी का विशेष योगदान रहा। परिवार की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेकर धर्मवीर जी को समाज-सेवा के लिये मुक्त रखा। हम इस श्रद्धाञ्जलि सभा को प्रेरणा-दिवस के रूप में मनायें।

* **स्वामी धर्मानन्द**- आज परोपकारिणी सभा देश में ही नहीं बल्कि विदेश में भी प्रतिष्ठित है। ये केवल धर्मवीर जी के कारण ही हुआ। उनके दृढ़ निश्चय का ही परिणाम है कि ऋषि उद्यान अपने इस वर्तमान स्वरूप में है। हम धैर्य रखें और उनके कार्यों को आगे बढ़ायें।

* **डॉ. ज्वलन्त कुमार**- जनज्ञान पत्रिका के सम्पादक भारतेन्द्र जी ने अपनी पत्रिका में डॉ. धर्मवीर का एक फोटो छापा था, जिस पर लिखा था "आशा की नई किरण" ये वाक्य शत-प्रतिशत सही सिद्ध हुआ। हमने पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम जी को नहीं देखा है, पर धर्मवीर जी में हम उनके दर्शन कर सकते हैं।

* **श्री विनय आर्य (मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)**- आचार्य धर्मवीर जी के कार्यों के बारे में हम सब जानते हैं, उन्हें बिल्कुल भी नहीं भुलाया जा सकता। आज तक वो अपनी वाणी, विचार तथा कार्यों से जीवित थे। पर अब उनको जीवित रखना हमारा कार्य है।

* **श्री दीनदयाल गुप्त (उप प्रधान, परोपकारिणी सभा)**- डॉ. धर्मवीर जी आर्यसमाज के प्रचार में सदैव तत्पर रहते थे। अपने अन्तिम समय में भी वो प्रचार में रत थे। हम सब उनके कार्यों को आगे बढ़ायें।

* **श्री रामनारायण शास्त्री**- जो निर्भीकता एक ब्राह्मण में होनी चाहिये, जैसा ब्राह्मण को लिखना चाहिये, बोलना चाहिये, करना चाहिये- इन सब गुणों का उदाहरण थे- डॉ. धर्मवीर। हम उनके कार्यों को आगे बढ़ायें तो हम सच्ची श्रद्धाञ्जलि दे पायेंगे।

* **श्री धर्मेन्द्र गहलोत (मेयर-अजमेर)**- धर्मवीर जी ने जिस पथ को अपनाया, उस पर निडर होकर चलते हुये जीवन ही बलिदान कर दिया। जिस पथ को उन्होंने स्वीकार किया, उस पथ पर हम भी चलें।

* **स्वामी विदेहयोगी**- धर्मवीर जी आर्यसमाज की वाटिका के एक माली थे, इस वाटिका को उन्होंने अपना जीवन देकर सींचा है। परोपकारिणी सभा हमारे लिये वैसी ही है, जैसा सिक्खों के लिये स्वर्ण मन्दिर। डॉ. धर्मवीर जी के बाद भी ये सभा इसी प्रखरता के साथ कार्य करती रहे।

* **श्री रासासिंह रावत (भूतपूर्व सांसद-अजमेर)**- प्रो. धर्मवीर जी वे व्यक्ति थे, जो जिस कार्य में लगे, उसे पूरी ऊँचाई पर ले गये। वे एक शक्कर की रोटी के जैसे थे, जहाँ से चखो, मीठा ही मीठा। आर्यसमाज और दयानन्द के प्रति उनकी सच्ची श्रद्धा थी।

* **श्री शिवशंकर हेड़ा (चेयरमैन-अजमेर विकास प्राधिकरण)**- डॉ. धर्मवीर जी सादगी की मूर्ति थे। उनके मन में छोटे-बड़े का कोई भेदभाव नहीं था। जब कभी वो चर्चा करते थे तो उठकर जाने का मन नहीं होता था। आज उनके चले जाने से उनके परिवार को ही नहीं बल्कि अजमेर और पूरे राष्ट्र को भी बड़ी हानि हुई है। ईश्वर उन्हें अपने चरणों में स्थान दे और परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

* **स्वामी ध्रुवदेव (दर्शनयोग महाविद्यालय, रोजड़, गुज.)**- डॉ. धर्मवीर जी की वेद और वैदिक सिद्धान्तों में गहरी निष्ठा थी। अपने तप, त्याग, अर्थ-शुचिता आदि गुणों के कारण ही वे पूज्य थे। दर्शनयोग महाविद्यालय इस दुःखद घटना पर हार्दिक शोक प्रकट करता है।

* **श्री प्रकाश (भाई-डॉ. धर्मवीर जी)**- आप सब बड़े सौभाग्यशाली हैं कि आप लोगों को उनका सान्निध्य मिला, पर मैं ये सौभाग्य प्राप्त नहीं कर सका- इस बात का सदैव दुःख रहेगा। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि हम सबके ऊपर जो वज्रपात हुआ है, प्रभु उसे सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

* **ब्र. रविशंकर (गुरुकुल-ऋषि उद्यान)**- हम सभी के अन्दर ये विचार उठ रहे हैं कि डॉ. धर्मवीर जी की भरपाई कैसे होगी, पर ये कहना उनकी प्रशंसा नहीं, अपमान होगा, क्योंकि इससे हम उनके कार्यों को आगे बढ़ाने में असमर्थता जता रहे हैं। हम उनके कार्यों को और गति प्रदान करें, यही उनके लिये सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

।।ओ३म्।।

वेद गोष्ठी २०१६ के लिए निर्धारित विषय

दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता

उपशीर्षक

१. महर्षि दयानन्द का विशिष्ट दार्शनिक चिन्तन
२. महर्षि दयानन्द का ईश्वरविषयक चिन्तन
३. ईश्वर एवं ब्रह्म, ईश्वर/ब्रह्मस्वरूप, कर्तृत्व
४. महर्षि दयानन्द का जीव विषयक चिन्तन (जीव का स्वरूप, संख्या, परिमाण, सादि-अनादि, जीव-ब्रह्म सम्बन्ध, अंशांशिभाव, जीव-जगत् सम्बन्ध, जीव का कर्तृत्व एवं भोक्तृत्व, मुक्ति में जीव का स्वरूप, जीव के मौलिक गुण, जीव-आत्मा-जीवात्मा)
५. महर्षि दयानन्द का जगत् विषयक चिन्तन
६. मध्यकालीन आचार्यों (शङ्कर एवं रामानुज) केसाथ दयानन्द के दार्शनिक विचारों की तुलना
७. स्वर्ग/मोक्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ -

१. संहिता
२. उपनिषद
३. षड्दर्शन
४. दयानन्द दर्शन - डॉ. वेदप्रकाश गुप्त-मेरठ
५. दयानन्द दर्शन - डॉ. श्री निवासशास्त्री - कुरुक्षेत्र वि.वि.
६. त्रैतवाद का उद्भव और विकास-डॉ. योगेन्द्रपाल शास्त्री
७. आदर्श त्रैतवाद-राजसिंह भल्ला -सार्वदेशिक आ.प्र. सभा, दिल्ली
८. महर्षि दयानन्द विरचित ग्रन्थ
९. जीवात्मा - गंगाप्रसाद उपाध्याय-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली
१०. आत्मदर्शन - महात्मा नारायण स्वामी - सार्वदेशिक आ.प्र.सभा-दिल्ली
११. आस्तिकवाद-पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय-घूडमल प्रहल्लादकुमार - हिण्डौन, राजस्थान
१२. मृत्यु और परलोक म. नारायणस्वामी - सार्वदेशिक आ.प्र. सभा, दिल्ली
१३. अनादि तत्त्व-पं. चमूपति
१४. वैदिक स्वर्ग- पं. चमूपति
१५. महर्षि दयानन्द के दार्शनिक मन्तव्य-डॉ. कर्मसिंह आर्य
१६. ईश्वर प्रत्यक्ष -पं. मदनमोहन विद्यासागर
१७. ईश्वरसिद्धि-डॉ. श्रीराम आर्य
१८. महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र व्यवहार-परोपकारिणी सभा, अजमेर

ऐसी कृपा करो कि हम सब धर्मवीर हों

- राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

हम में से किसी ने कभी सोचा ही नहीं कि माननीय डॉ. धर्मवीर जी हम से इतनी शीघ्र बिछड़ जायेंगे। मौत ने एक झपटा मार कर उन्हें हमसे छीन लिया। ६ अक्टूबर २०१६ को प्रातः वह चल बसे। यह कहना तो ठीक नहीं कि वह मर गये। अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए आपने कर्त्तव्य-पथ पर प्राण त्याग दिये। हम कहेंगे कि श्री धर्मवीर जी मरे नहीं, प्रत्युत् आपने इस लोक में जीना बन्द कर दिया। मृत्यु के समय किसी से कोई संवाद नहीं किया।

डॉक्टरों को हाथ से संकेत करते हुए धैर्य रखने की प्रेरणा देते रहे। जो कुछ उन्होंने कण्ठाग्र कर रखा था, उसका चलते-फिरते यात्रा में भी पारायण करते रहते थे। देह-त्याग के समय भी कुछ बड़बड़ाते रहे। हॉस्पिटल जाते समय भी कह रहे थे "चले हम दयानन्द के स्थान पर" स्टेशन से लाते समय भी सेवकों को यही का "मुझे ऋषि उद्यान नहीं, श्मशान ले चलो।" उनका दाह कर्म वहीं किया गया, जहाँ महर्षि दयानन्द जी का अन्तिम संस्कार किया गया।

कर्मण्यता की मूर्त्ति, पुरुषार्थ-परमार्थ के पुतले डॉ. धर्मवीर जी का जीवन अत्यन्त घटनापूर्ण रहा है। वह इस विनीत को ६० वर्ष से जानते थे और मेरा उनसे गत ५० वर्ष से घनिष्ठ सामाजिक नाता था। मेरे नयनों के सामने उनके क्रियाशील, संघर्षमय जीवन की फिल्म घूम रही है। मुझे लिखने को कहा जाये तो मैं एक दम बिना किसी तैयारी के उनके जीवन के २५०-३०० प्रेरक प्रसंग लिख सकता हूँ। परोपकारी के विशेषाङ्क के लिए क्या लिखूँ और क्या छोड़ूँ?

वह ईश्वर से कोई ऐसा वरदान लेकर आये कि वह निरन्तर नया-नया इतिहास रचते रहे। जहाँ भी हाथ लगाया, एक सृष्टि रच दी। धर्मवीर जी किसी व्यक्ति की चाकरी नहीं करना चाहते थे, ध्येयनिष्ठ थे। इतिहास में ऐसे दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति ही स्थान पाते हैं।

गृहस्थी बने तो अपनी तीन मेधावी पुत्रियों की भाषा संस्कृत बनाई। इसे मातृभाषा तो कह नहीं सकते। उनकी पितृभाषा में उनके संवाद, वार्त्तालाप और व्याख्यान सुनकर श्रोता झूम उठते थे। क्या धर्मवीर जी की निष्ठा, संस्कृत व संस्कृति प्रेम का यह कोई साधारण चमत्कार है?

धर्मवीर जी परोपकारिणी सभा के जब न्यासी बने, तब सभा का अस्तित्व रिकॉर्ड में तो था, परन्तु इतिहास में सभा को कौन जानता था? स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, श्रीमान् गजानन्द जी आर्य तथा धर्मवीर जी ने इतिहास में इस सभा की पहचान बना दी। मैं लगभग आधी शताब्दी से ऋषि मेले पर आ रहा हूँ। वर्षों पर्यन्त बिना बुलाए आया करता था। यहाँ चाय का कप पिलाने वाला, अल्पाहार पूछने-करवाने वाला कोई नहीं होता था। अब धर्मवीर युग में पूरा वर्ष अतिथियों को दूध, भोजन, सब कुछ मिलता है। इसका श्रेय हमारी इसी त्रिमूर्ति को जाता है।

स्नानागार यहाँ नहीं था। स्वामी सर्वानन्द जी की कोटि का संन्यासी गैलरी में ठहरते हमने देखा। बिस्तर, खाट, तख्तपोश की व्यवस्था नहीं थी। परोपकारिणी सभा को एक धर्मवीर मिला, तो करोड़ों-अरबों रुपये के भवन बनते गये। पुराने जीर्ण भवनों की नियमित मरम्मत होती रहती है। यह भिक्षा का भोजन करने वाले सर्वानन्द संन्यासी के आशीर्वाद, सेठ गजानन्द आर्य की सरलता, निर्मलता, संगठन, बुद्धि तथा धर्मवीर लेखराम के धर्मानुरागी योद्धा डॉ. धर्मवीर की आग, पुरुषार्थ, कर्मण्यता व ऊहा का चमत्कार है।

सर्वानन्द महाराज के चरण कमल यहाँ पड़े तो इन दोनों धर्मवीरों (गजानन्द आर्य व धर्मवीर आर्य) के पुण्य प्रताप से यहाँ गुरुकुल की वाटिका लहलहाने लगी। यहाँ महाशय चून्नीलाल चन्ननदेवी गोशाला की स्थापना से अतिथियों की, यात्रियों की, यतियों की, ब्रह्मचारियों की, सबकी दुग्धामृत, लस्सी, दही से सेवा होने लगी।

'परोपकारी' पत्रिका की प्रसार संख्या जानते हो क्या थी? मात्र ४००-५००, बस। धर्मवीर सम्पादक बनते गये, तो वही परोपकारी देश-विदेश में फैलता जा रहा है। आज विरोधी, विधर्मी, अपने-बेगाने सब इसे चाव से पढ़ते हैं। परोपकारी मासिक से पाक्षिक हो गया। देश-विदेश में कोई भी वेद पर, ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज पर, आर्य संस्कृति पर वार-प्रहार हो, परोपकारी बहुत सजगता से

उत्तर देने को सजग रहता है। एक भी अंक ऐसा नहीं, जिसमें विरोधियों के आक्षेपों व आक्रमणों का युक्ति, तर्क व प्रमाण से हमारे विद्वान् अपनी ज्ञान प्रसूता धारदार लेखनी से उत्तर न देते हों।

यह सब डॉ. धर्मवीर आर्य की श्रद्धा, मेधा बुद्धि व ऋषि मिशन के लिए अखण्ड निष्ठा का चमत्कार है। धर्मवीर जी की इस नीति-रीति ने प्राणवीर पं. लेखराम, पं. गणपति शर्मा, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के स्वर्णिम अतीत को वर्तमान कर दिखाया है। उनकी इस सेवा को हमारे विरोधी तो जानते हैं, मानते हैं, आर्यसमाज भी जानता ही होगा।

परोपकारी ने ऋषि मिशन को ऐसे-ऐसे रत्न दिये हैं, जिनके सुदृढ़ कंधों पर आर्यसमाज के उज्जवल भविष्य का भार छोड़कर हमारे धर्मवीर जी ने हमसे विदाई ली है। मैं ऐसे किस-किस रत्न का नाम यहाँ गिनाऊँ। परोपकारिणी सभा के भक्त उदार दानी श्री पीताम्बर कमल जी-रामगढ़, श्री पंकज शाह-विदर्भ वाले, श्री अनिल आर्य-चामधेड़ा, हरियाण की सेना, राजस्थान से एक अनुभवी साहित्यकार श्री वेदप्रकाश आर्य और दूर दक्षिण से श्री रणवीर आर्य-तेलंगाना वाले समर्पित सेवक परोपकारी की ही देन हैं।

धर्मवीर जी की नीतिमत्ता का लोहा कौन नहीं मानेगा? परोपकारी धर्मरक्षा में सब विरोधी शक्तियों से टक्कर लेता ही रहता है। विरोधी हमारे किसी भी लेख पर केस करके हमें कोर्ट में नहीं घसीट सके। भले ही कुछ अपने घने सयानों ने अपना बुद्धि कौशल दिखाकर धर्मवीर जी व उनके सहयोगी आर्य पुरुषों पर अभियोग चलाकर यह कमी भी पूरी कर दी है।

हमारे धर्मवीर जी की लेखनी व वाणी पर आर्यसमाज के बाहर के बड़े-बड़े धर्माचार्य, शंकराचार्य भी मुग्ध होते देखे गये। इस धर्मवीर ने स्वामी श्रद्धानन्द, पूज्य महात्मा नारायण स्वामी, लौह-पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द का इतिहास दोहराते हुए, वेद-प्रचार करते हुए रणभूमि में ही प्राण त्यागे हैं। यह हमारे लिए अत्यन्त गौरव की बात है। अन्तिम श्वास लेने से पूर्व सेवा करने वाले ब्रह्मचारी योगेन्द्र आर्य जी से आग्रहपूर्वक रात्रि समय में कहा, "आप मेरी चिन्ता न करें। आप सो जायें। आप विश्राम करें।"

धर्मवीर जी ने घर नहीं बनाया। अपने लिए कभी कुछ नहीं माँगा। न दक्षिणा माँगते हुए उन्हें देखा गया और न ही मार्ग व्यय की कहीं माँग की। घर घाट बनाने, धन कमाने की कतई चिन्ता नहीं की। जो कुछ कहीं से मिला, चुपचाप सभा को भेंट करते रहे। क्या-क्या घटना यहाँ दें?

श्रोता एक हों अथवा दो-तीन या सहस्रों, उन्हें इसकी कतई चिन्ता नहीं थी। गुरुवर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का यह नाम लेवा प्रतिवर्ष कुछ समय के लिए बिन बुलाये दूरस्थ प्रदेशों में, ग्रामों में, नगरों में, जहाँ आर्यसमाजें नहीं हैं या शिथिल हो चुकी हैं, मर चुकी हैं, जहाँ कोई विद्वान् नहीं जाता, वहाँ प्रचारार्थ पहुँच जाते। अपनी पत्नी को भी प्रचार यात्राओं पर लेकर निकलते रहे। कभी इस यात्री को और ओम् मुनि जी जैसे साथी को लेकर दूर-दूर निकले जाते थे। अब भी वर्ष २०१७ में दो यात्राओं को निकालने की मुझे स्वीकृति चलभाष पर देकर कहा, "अजमेर आकर हम सब साथी बैठकर इनकी रूपरेखा बनायेंगे। आप यात्राओं की घोषणा कर दें।" मैंने कहा, "घोषणा तो आप या मुनि जी को ही करनी है। कौन-कौन साथ होगा, यह मिलकर निर्णय कर लेंगे।" इन यात्राओं के निकालने से पहले ही वह अन्तिम यात्रा पर निकल गये।

वैदिक पुस्तकालय के श्री गुप्ता जी ने कहा कि 'मैंने तो ऐसा प्रधान कभी नहीं देखा, यदि वैदिक पुस्तकालय से साहित्य मँगवाने के लिये कोई पत्र उनको मिलता तो वह सेवक के हाथ मेरे पास नहीं पहुँचाते थे। मुझे भी अपने कार्यालय बुलवाकर ऐसे पत्र नहीं सौंपते थे। स्वयं मेरे टेबल पर आकर पत्र मुझे दिया करते थे।' यह प्रसंग सुनाते हुए उनके नयन सजल हो गये।

आर्यसमाज की नाड़ी पर सदा इस वैद्य, विद्वान् व नेता का हाथ रहता था। उनको देशभर के समर्पित समाज सेवियों का अता-पता रहता था। वह सबकी चिन्ता करते थे। संन्यासी का, वानप्रस्थी का, ब्रह्मचारी का, विद्वान् का, सबका उन्हें ध्यान रहता था। आर्यसमाज में कौन जानता है कि डॉ. हरिश्चन्द्र जी की कोटि का वैज्ञानिक व विद्वान् मिशनरी अब तक ८५ देशों में धर्म प्रचार कर चुका है। भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनि जी के पश्चात् यह भी एक कीर्तिमान है। अपनी अमेरिका यात्रा से लौटकर धर्मवीर जी ने भाव-विभोर होकर मुझे यह जानकारी सविस्तार दी।

आन्ध्र से लौटकर मुझे बताया कि श्रीयुत् शत्रुञ्जय जी व डॉ. बाबूराव जी ने आई.आई.टी. में आर्यसमाज का अच्छा संगठन करके सुयोग्य युवक-युवतियों का निर्माण करके उन्हें सक्रिय किया है। इसी प्रकार देश-विदेश के

कार्यकर्त्ताओं का वह पूरा पता रखते थे।

उनके व्यक्तित्व का एक अनुकरणीय पहलु यह था कि उन्होंने तीनों पुत्रियों का जाति बन्धन तोड़कर विवाह किया। कहना सरल है, परन्तु करना कठिन है। वह जातिवाद, प्रान्तवाद की सोच से बहुत ऊपर थे। निडरता, ऋषि भक्ति के गुण उनको बपौती से प्राप्त हुए। उनके पिता श्री पं. भीमसेन जी की सत्यवादिता व धर्मनिष्ठा को मराठबाड़ा के सब आर्य जानते-मानते थे। यही गुण हमने श्री धर्मवीर जी में देखे।

धर्म-प्रचार उनकी दुर्बलता बन चुका था। ट्रेन में यात्रा करते हुए वह सह यात्रियों में वेद की विचारधारा का सन्देश देने का अवसर हाथ से जाने नहीं देते थे। उठते-बैठते, सोते-जागते वह ऋषि मिशन के लिए ही सोचते थे।

उनके निधन से जो क्षति हुई है, वह अपूरणीय है। आओ! ईश्वर से यह प्रार्थना करें:-

हे प्रेममय प्रभु! तुम्हीं सबके आधार हो।
तुम को परमपिता प्रणाम बार-बार हो।।
ऐसी कृपा करो कि हम सब धर्मवीर हो।
वैदिक पवित्र धर्म का जग में प्रचार हो।।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

गतः सुहृत् सः प्रियधर्मवीरः

- सुभाष वेदालंकार

वाचा वरीयान् मनसा महीयान् विचक्षणो वेदविदां वरेण्यः,
यः कर्मवीरो धृतिमान् तपस्वी, गतः सुहृत् सः प्रियधर्मवीरः।।

यो भारतीति प्रस्थितो बुधेन्द्रैः, वेदप्रचारे सततं रतोऽभूत,
देशे तदर्थं विचचार नित्यं, गतः सुहृत् सः प्रियधर्मवीरः।।

परोपकारी सः परोपकारी-संपादको लेखकवर्य आसीत्,
कृते सभायाः कृतवान् प्रयत्नान्, गतः सुहृत् सः प्रियधर्मवीरः।।

सभां समुन्नेतुमहो प्रयत्नान् चकार यान् तान्नहि को नु वेद,
स्वजीवनं येन समर्पितं च, गतः सुहृत् सः प्रियधर्मवीरः।।

जाता क्षतिर्देशसमाजयोर्या पूर्तिं न सा यास्यति तूर्णमेव,
जगाम दूरं परिवारतो नो, गतः सुहृत् सः प्रियधर्मवीरः।।

- अजमेर

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि हों तो कृपया सभा के पते पर भिजवा देवें।

परोपकारी पत्रिका का अगला अंक डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर विशेषांक के रूप में होगा, जिन भी महानुभावों के उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें। ई-मेल-**psabhaa@gmail.com**

-मन्त्री, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर-३०५००१ (राज.)

ऋषि मेला-आवास व्यवस्था

ऋषि मेले में पधारने वाले सभी आर्य नर-नारी अपने आने की सूचना से अवगत करावें, ताकि समुचित प्रबन्ध आपके आवास का किया जा सके। जो लोग ऋषि उद्यान से बाहर होटल में ठहरना चाहते हैं, वे सूचित करें एवं कक्ष हेतु किराया अग्रिम सभा के खाते में डलवाकर सूचित अवश्य करें। अधिक जानकारी के लिए **सम्पर्क करें-**

वासुदेव आर्य-०९४६०११२०९२,
ऋषि उद्यान- ०१४५-२६२१२७०,
सभा कार्यालय- ०१४५-२४६०१६४

डॉ. धर्मवीर जी को श्रद्धाञ्जलि देने हेतु अधिक-से-अधिक संख्या में ऋषि मेले में पधारें।

शान्ति यज्ञ

श्री धर्मेन्द्र जी गहलोत
महापौर, अजमेर

श्री शिवशंकर जी हेड़ा
चेयरमैन, अजमेर विकास प्राधिकरण

श्रीमती सुयशा जी
ज्येष्ठ-सुपुत्री

श्री सुरेश जी अग्रवाल
प्रधान सार्वदेशिक

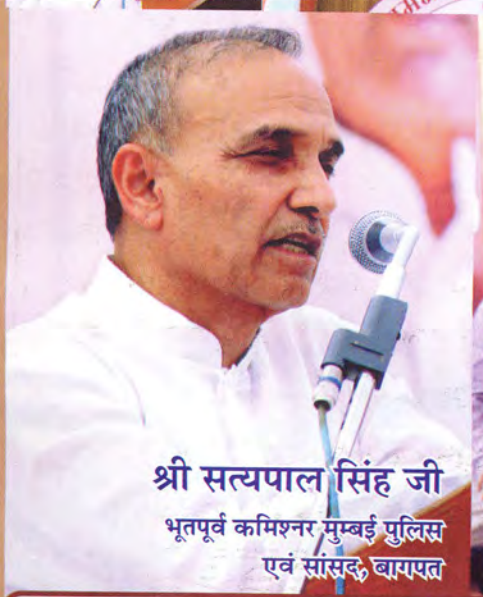

श्री सत्यपाल सिंह जी
भूतपूर्व कमिश्नर मुम्बई पुलिस
एवं सांसद, बागपत

स्वामी सुमेधानन्द जी
सांसद, सीकर

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : १५ अक्टूबर, २०१६ आर.एन.आई. ३९५९/५९

...ांजलि सभा

9 अक्टूबर, 2016

महामहिम राज्यपाल
डॉ. देवव्रत जी, हिमाचल

श्री कैलाश जी सत्यार्थी
नोबल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित

...ी सज्जन सिंह जी कोठारी
पूर्व न्यायाधीश - राजस्थान उच्च न्यायालय, लोकायुक्त-राजस्थान

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में

एक टिकिट